नबघर

नबघर

नाटक

बेचन ठाकुर

ऐ संग्रहमे चारिटा नाटक/एकांकी अछि। पहिल- ‘नीशा मुक्ति’, दोसर- ‘बरहम बाबा’, तेसर- घोघवाली कनियाँ’ आ चारिम- ‘रसुन पियौज’। चारू नाटकक पहिल अक्षरक आधारपर संग्रहक नाओं ‘नबघर’ राखल अछि। ◌

ISBN : 978-93-87675-59-9

दाम : 200/-

© श्री बेचन ठाकुर

दोसर संस्करण : 2018 (**दोसर संस्करण :** 2017)

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली (सुपौल)
बिहार। पिन : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

NABGHAR
Collection of One-Act Plays by Sh. Bechan Thakur

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉ निक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुप्तादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

क्रम

नीशा मुक्ति : 08

बरहम बाबा : 35

घोघवाली कनियाँ : 45

रसुन पियौज : 112

नीशा मुक्ति

पात्र परिचय : नीशा मुक्ति

1. शंकर : एकटा गरीब किसान
2. सुनैना : शंकरक पत्नी
3. सुन्नर : शंकरक बड़का बेटा
4. खरवन : शंकरक छोटका बेटा
5. शान्ति : शंकरक बड़की बेटी
6. चानी : शंकरक छोटकी बेटी
7. खट्टर : शंकरक दोस
8. मीना : सतमा वर्गक छात्रा
9. राजीव : मीनाक इसकूलक छात्र
10. रौशन : मीनाक इसकूलक छात्र
11. केदार सिंह : पहिल पुलिस
12. बदरी सिंह : दोसर पुलिस
13. रघुनाथ : पहिल चौकीदार
14. देवनाथ : दोसर चौकीदार
15. मटरा : स्थानीय किराना दोकानदार
16. रामनाथ : रेल यात्री
17. प्रभुदयाल : रेल यात्री
18. नन्द किशोर : रेल यात्री
19. प्रियंका : रेल यात्री
20. शशिकान्त : प्रधानाध्यापक

21. सोमदेव : सहायक शिक्षक
22. अनूप : सहायक शिक्षक
23. सोनी : सहायक शिक्षिका
24. चन्दन : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
25. गुंजन : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
26. रानी : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
27. अमन : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
28. महारानी : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
29. कपिलदेव : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
30. रामदेव : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
31. हरिदेव : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
32. ललिता : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
33. कविता : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी
34. महेश्वर : मानव श्रृंखलाक हाकिम
35. दिनेश : फोटोग्राफर
36. बच्चन : एकटा समाजिक बेकती
37. राम शरण : बच्चनक सहयोगी
38. रामलाल : एकटा समाजिक बेकती
39. रामबाबू : चाह दोकानदार
40. ललन : रामबाबूक सहयोगी

दृश्य एक

(स्थान- शंकरक घर। शंकरक पत्नी सुनैना। दूटा बेटा। सुन्नर आ खरवन तथा दूटा बेटी शान्ति आर चानी मंचपर उपस्थित अछि। सुनैना परिवारिक दयनीय स्थितिक सम्बन्धमे चिन्तामग्न अछि। शान्ति आर चानी तीती-तीती खेलैए। सुन्नर आर खरवन गुल्ली–डन्टा खेलैए।)

शान्ति- ती था।

चानी- ती था।

शान्ति- ती था। ई हमर राज भेलौ। हमरा राजमे पएर नै दीहें।

चानी- ती था। ई हमर राज भेलौं। तूँ हूँ हमरा राजमे पएर नै दऽ सकै छें।

शान्ति- *(चानीक राजमे जा कऽ)* हम एबौ तोरा राजमे। तूँ की करभिन?

चानी- तूँ हमरा राजमे सँ चलि जो। नै तँ कोनो बाप काज नै देतौ।

शान्ति- नै जेबौ गइ, नै जेबौ।

चानी- एक दू तीन कहै छियौ मारबौ। नै तँ हमरा राजमे सँ अपना राजमे चलि जो।

शान्ति- मारि कऽ देखही तँ। बापसँ भेँट करा दइ छियौ।

(दुनूमे मारि फँसि गेल। दुनू उट्ठम-पटका करैए। सुनैना दौग कऽ आबि दुनूकेँ छोड़ा दू दिस केलक।)

सुनैना- सरधुआकेँ खाली जनमाबै ले होइ छइ। प्रतिपाल करैमे करौआ लागल छइ। दारू-ताड़ी-गाजा पीऐ ले होइ छइ। मुड़ी मचरूआकेँ एकौटा नीशा नै छूटल छइ। भाँग खाइए। खैनी खाइए, बीड़ी-सिकरेट पीते अछि। जर्दाबला पान खाइते अछि। चाह पीबते अछि। हे मैया सरसत्ती, एहेन घरबला सात घर दुश्मनोकेँ नै देबइ।

(सुनैना फेर माथा-हाथ दऽ बैस रहली।)

सुन्नर- *(गुल्ली फेंक कऽ)* ओत्तैसँ पढ़ैत आ।

खखन- *(एक टाँगपर)* चैत-कबड्डी, चैत कबड्डी, चैत कबड्डी चैत कबड्डीऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।

(खखनकेँ रस्तेमे साँस टुटि गेल।)

सुन्नर- सार नै भेलौं, फेर पढ़।

खखन- *(फेर जगहपर जा कऽ)* चैत कबड्डी आबए दे, तबला बजाबऽ दे। गीत-नाद गाबए दे, नटुआ नचाबऽ दे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। *(खखन ठाढ़ भऽ हकैम रहलए।)*

सुन्नर- फेरो नै भेलौ सार। फेरो जो। पढ़ गऽ।

खखन- *(तुरैछ कऽ)* हम नै जेबौ सार। हम हकैम गेलौं हेन।

(सुन्नर खखनकेँ एक सटका बैसा देलक। खखन

चिचिआ कऽ कानऽ लागल आर हाथ पएर पटकऽ लागल।)

माए गै माए, बाप रौ बाप, सार सभ मारि देलक, जे सार हमरा मारलकै ओकरा माएके।

(सुनैना उठि कऽ दौगली। दुनूकेँ एक एक चाट मारि अपना लग लऽ जा कऽ बैसेली। दुनू एक-दोसरपर कन्हुआइए।)

सुनैना- तूँ सभ इसकूल किए ने गेलहीन? घरपर गुल्ली-डन्टा खेलै छेँ आर मारि-गारि करै छेँ।

सुन्नर- कॉपी छे नहियेँ तँ इसकूल केना जेबै?

खखन- हमरो पेन नइए तँ मुड़ी लऽ कऽ जेबै इसकूल?

सुनैना- बापसँ पाइ मांगए जाइ गेलहीन?

सुन्नर- मंगलिऐ तँ कहलक- पाइ नै छौ। बुढ़बाकेँ दारू-गाँजा पीऐ ले होइ छै पाइ आर कॉपी ले नै होइ छइ।

खखन- हरदम बुढ़बा खिसियाएले रहै छइ। हम मंगलिऐ तँ कहक-जो ने कहिऐं माएकेँ।

सुनैना- हँ हँ, किए ने? हमरा थैली देने छै रखै ले। अपना ले लल आर गोइठा बीछऽ चल। अपना दारू-ताड़ी, गाँजा-भाँग ले पाइए नै होइ छै आर हमरा रखै ले पाइ दइए। एत्तै केतौ नीशाँ केनाइ होइ छइ। बाप रे बा, हरदम नीशेमे चूर। चकेठबा जेतै कहियो चटपटमे। टुनकीबा कमाइ कम नै छइ। मुदा पीऐ ले बेहाल रहै छइ। हम सभ अन्न बेगैर मरे छी। धिया-पुता कुकुर-बानर जकाँ एमहर-

ओमहर ढहनाइए। हे भगवान, हे दाता दिनकर, ओकर नेत सुधारहक। नै तँ हमरा सभकेँ मौगैत दऽ दएह।

(सुनैना कानए लगली।)

सुन्नर- माए गइ, खाइ ले दे। बड़ भूख लागलए।

खखन- *(कनैत)* केतए सँ देबौ। की देबौ? घरमे किच्छो नै छौ।

शान्ति- खाइले दे नऽ माए। हमरा बड़ भूख लागलए।

चानी- *(कनैत)* खाइले दे नऽ गइ। खाइ ले दे नऽ गइ।

सुनैना- *(खिसिया कऽ)* खाइ जाइ जो नऽ हमर देह। नोचि ले हमर देह आर खाइ जाइ जो।

(सुनैना कानऽ लगली। झूमैत-झामैत शंकरक प्रवेश।)

शंकर- की भेलै हन? सुन्नर माए किए कनै छेंं? शान्ति, की भेलौ हेन माएकेँ?

शान्ति- खाइ ले मंगलिऐ तँ कानऽ लागल।

शंकर- सुन्नर माए, तूँ कनलें किए? हमरा कहितेँ। खाइक जोगार हम करितिऐ।

सुनैना- आबो की भेलै? दहक पाइ। कीन आनै छी।

शंकर- *(जेबी- ढट्ठामे ताकि कऽ)* पाइ कहाँ छौ जे देबौ? पाइ तँ छेलै हन। की भेलै? लगैए केतौ खसि पड़लै। अच्छा जो, आइ केकरोसँ उधारी आनि लीहें।

सुनैना- जा नऽ तूँही। आनि दहक नऽ। हमरा कोइ उधारी नै दइए। सभकेँ धरने छिऐ। सभ खोंखिया कऽ दौगैए। तूँही आनि दहक।

शंकर- तूँही जो। हमरा तँ आओर कोइ नै दइए। तूँही जो। तोरा दऽ देतौ। तूँ मौगी छिहीन।

सुनैना- हम नै जाएब, हम नै जाएब, हम नै जाएब। हम मुँह नोचबै ले जाउ गऽ।

शंकर- *(खिसिया कऽ)* तोरा जाए पड़तौ। हमर कहल करए पड़तौ। नै तँ देखा देबौ।

सुनैना- हम नै जाएब। हमरा कोइ उधारी नै दइए। अपने जा।

शंकर- *(खिसिया कऽ)* हमर कहल नै करभिन तँ देखही हमर खेल।

(शंकर सुनैनाकेँ अनधून मारऽ लागल चारू धिया-पुता कानऽ लागल। सुन्नर आर शानति शंकरकेँ अपन-अपना दिस घीच कऽ छोड़बऽ लागल आकि सभ धियो-पुताकेँ अनधून मारऽ लागल। सभ कियो जोर-जोरसँ चिचियाए लागल- माए गै, बाप रौ। अन्तमे सुनैनाकेँ मारऽ लागल। सुनैनाक मुहसँ खून खसैत देख शंकर भागल।)

◌

पटाक्षेप।

दृश्य दू

(स्थान- समूदायिक भवन। शंकर आर खट्टर दारू पी रहलए। दुनू गोरे दोस छैथ। दुनू चखनो खा रहलए।)

शंकर- रौ बैंह खट्टरा, औझका दारू बड़ सुअदगर छौ। आइ भरि मन, भरि छाँक पीबौ।

खट्टर- शंकर सार, आइ मटराक दोकानक ताला तोड़ै के छइ। छेनी, मरिया आर रीन्च लऽ लीहें।

शंकर- लै के कोन जरूरी छइ। संगेमे छइ।

(फाँड़सँ निकालि खट्टरकेँ देखौलक।)

खट्टर- सार, तूँ पहुँचल फकीर छें रौ।

शंकर- तब नऽ मलफै उड़बै छिऐ।

(एकटा तेरह बर्खक सुन्नैर लड़िकी मीना बस्ता लऽ कऽ गुजरली।)

खट्टर- रौ सार शंकर, किछु देखबो केलही?

शंकर- कथी रौ?

खट्टर- समान। चारा।

शंकर- कथी कहै छिहीन रौ? खोलि कऽ बाज नऽ।

खट्टर- एगो लड़की इसकूल जाइ छेलै। उ छेलै कमाल के।

शंकर- चल नऽ कनी देखिऐ। सुनसान हेतै तँ देखबै।

(शंकर आर खट्टर अन्दर गेल। मीना जोर-जोरसँ माए गै, बाप रौ चिचिआ रहलए। कनीकालक पछाइत मीना दम तोड़ि देली।)

खट्टर- *(अन्दरसँ)* रौ सार शंकरबा, तोरा बुते मरलै।

शंकर- *(अन्दरेसँ)* रौ बैंह खट्टरा, तोरा बुते मरलै।

खट्टर- लऽ चल एकरा। केतौ सड़क कातमे फेंक देबै।

शंकर- जल्दी चल। विद्यार्थी सभ अबै छइ। पकड़ा जाइ जेबें।

(शंकर आर खट्टर मीनाकेँ उठौने प्रवेश केलक। शीघ्र दुनू गोरे मीनाकेँ मंचपर पटैक भागि जाइ गेल। राजीव आर रौशनक प्रवेश। दुनू विद्यार्थी मीनाक लाश देख डरि कऽ चौंकल।)

राजीव- रौ रौशन, उ तँ मीना छै। अपने इसकूलमे पढ़ै छइ। इसकूलक डरेशो पहीरने छइ।

रौशन- राजीव, हमरा बड़ डर होइ छौ। भाग एतए सँ। जल्दी चल, इसकूलमे सरकेँ कहबै।

(राजीव आर रौशनक तेजीसँ प्रस्थान। कनियेँ कालक पछाइत दूटा पुलिस केदार सिंहआ बदरी सिंह अपन दूटा चौकीदार रघुनाथ आर देवनाथक संग प्रवेश केलैथ। चारू गोरे लाशकेँ देखलैथ।)

केदार सिंह- रेहे चौकीदार, लाश को लादो गाड़ी में।

बदरी सिंह- सर, ई लड़की इसकूल जा रही थी। रस्ता मं मौका पाकर कोइ दारूबाज इसका जान ले लिया। साला निशेवाज

सभ, हरामी बच्चा ऐ भोली-भाली बच्ची को लगत काम करके मारकर फेंक दिया।

केदार सिंह- रेहे चौकीदार सभ, मुँह का देखता है? जल्दी लादो लाश को गाड़ीमे।

(रघुनाथ आर देवनाथ लाशकेँ उठा कऽ अन्दर लऽ गेलैथ। दुनू पुलिस सेहो पाछू-पाछू अन्दर गेलैथ। कनैत-कनैत मटराक प्रवेश।)

मटरा- *(छाती पीटैत)* माए गै माए, बाप रौ बाप। जुलुम कऽ देलक चोरबा जनमल सभ। हमर बाल-बच्चा आब केना जीयत? बाप रौ बाप। सार चोरबाकेँ पकैड़तिऐ तँ टेंगारीसँ कुट्टी-कुट्टी काटि दैतिऐ।

(रघुनाथक प्रवेश।)

रघुनाथ- की भेलह हन मटरा भाय?

मटरा- बाप रौ बाप, जुलुम भऽ गेलह हौ चौकीदार। डिल्लीसँ कमा कऽ एलौं। एक लाख पूजी लगेलौं। किराना दोकान खोललौं। महिनो नै कमेलौं। साला चोरबा ताला तोड़ि देलक। सभटा समान लऽ गेलऽ। आब कथी हम बेचबऽ? धिया-पुता कथी खेतऽ? आब हम की करबै हौ चौकीदार? हमरा किछु नै फुराइ छह हौ चौकीदार।

रघुनाथ- ई गप तूँ थानामे इन्ट्री करा दहक।

मटरा- हमरा माहुरो खाइले पाइ नै छह। तँ थानापर केना जेबै? तूँही मदैत करऽ ने?

रघुनाथ- छोड़ि दहक। हमहीं बाड़ा बाबूकेँ कहि देबैन।

(रघुनाथक प्रस्थान)

मटरा- लगैए, शंकरबा सार लऽ गेल समान। मुदा हम देखलिऐ तँ नहि। जौं पकैड़तिऐ तँ सारकेँ टेंगारीसँ कुट्टी-कुट्टी काटि ओतै राखि दैतिऐ।

◌

पटाक्षेप।

दृश्य तीन

(स्थान- सामूदायिक भवन। शंकर आर खट्टर दुनू दोस चखनाक संग ताड़ी पी रहल अछि। दुनू मस्ती मे अछि।)

शंकर- सार खट्टर, तूँ अनाड़ी छें। कनियेँ ले रातिमे बाँचि गेलें। नहि तँ दुनू गोरे धरा जैतें। चौकीदर अबै छेलै हन।

खट्टर- सार शंकर, तूँही अनाड़ी छें। केहेन-केहेन पुलिस हमरा पकैड़ नै सकल। ई चौकीदरबा कोन माल-मे-माल छइ। बेसी एमहर-ओहमर करतै तँ ओकरो घरमे चोरि कऽ लेबै। लैत रहत गदहाबला।

शंकर- औझका की प्रोग्राम छौ से कह सार खट्टरा।

खट्टर- औझका हमर विचार ई जे बहुत परदेशी सभ फगुआमे गाम अबैत हेतै दिल्ली-पैंजाब-मुम्बइसँ कमा कऽ सभ लग बहुत-बहुत पाइ हेतइ। होशियारीसँ सबहक जेबी मारि लेबै। चल आइ टीशनेपर।

शंकर- ठीक विचार छौ। चल टीशनेपर। जेबी नै सुतरतै तँ बैग-एटैची सुतरतै नऽ। मुदा जाइसँ पहिने गाँजा पी कऽ मूड बना ले।

सट्टर- हमरो तँ सएह मन छेलौ। जेबी मारनाइ आकि बैग-एटैची पार केनाइ भीड़ेमे बढ़ियाँ होइ छइ।

(दुनू गोटे गाँजा पीलक। फेर दुनू गोरे सिकरेट धरा कऽ पीबैत टीशन दिस विदा भेल।)

शंकर- रौ बैंह खट्टरा, टीशनपर छौड़ी-मौगी सभ बड़ रहै छइ। एक-पर-एक सुन्नैर सभ रहै छइ। अपना सभकेँ जएह किछु तँ संतोख हेतइ।

खट्टर- शंकरबा सार, हमरा ओत्तै नै पढ़ा। हम अपने ओइ सभसँ रिटाइर छी। भीड़मे केत्तेकेँ हम की नै करै छी। चल, चल। जल्दी चल। गाड़ीक समए भऽ गेलै हन।

(दुनू गोरे टीशन जा रहलए। दुनू गोरे क्षणिक समए ले अन्दर गेल। क्षणिक पटाक्षेप भेल। अन्दरमे रामनाथ, प्रभु दयाल, नन्द किशोर आर प्रियंका ट्रेन पकड़ै ले तैयारअछि। शंकर आर खट्टर मंचपर आएल। शीघ्र पर्दा हटल। यात्री चारू गोरे कुरसीपर बैसलए। शंकर दुनू गोरे घुमि रहलए।)

शंकर- गाड़ी आबि रहल अछि। पॉकीटमार सँ सावधान। *(यात्री चारू गोरे उठलैथ। प्रभुदयाल जेबी टटोललैथ। शंकरसहैट कऽ प्रभुदयाल लग आर खट्टर प्रियंका लग गेल। शंकर दुनू गोरे पॉकेट मारऽ लागल आकि धरा गेल। चारू आदमी शंकर आर खट्टरकेँ मारि रहलए। मार सार के- मार सार केँ हल्ला भऽ रहलए। केदार सिंह आर बदरी सिंह प्रवेश कऽ दुनूकेँ अनधुन मारऽ लागल। शंकर दुनू गोरे ओंघरा रहलए। बदरी सिंह शंकरकेँ आर केदार सिंह खट्टरकेँ मारि रहल छैथ।)*

अनुवोधक- *(अन्दरसँ)* यात्रीगण कृपया ध्यान दें। जयनगर से चलकर नई दिल्ली को जानेवाली गरीब रथ एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म नं. १ पर आ रही है।

(अनुवोधक ऐ गपकेँ दू बेर कहलैथ।) चारू यात्री अन्दर गेल। दुनू पुलिस शंकर दुनू गोरेकेँ मारनाइ छोड़ि देलैथ। दुनू उठि कऽ हाथ-पएर झाड़लक।)

बदरी सिंह- ला साला, माल-पानी।

शंकर- आइ नै देब सर। आइ बड़ मारलौं हन।

केदार सिंह- तूँ बड़ी चौंसठ बा। बहोत माल मारता है। लाउ एक हजार।

खट्टर- आइ किन्नौं नै देब। अहाँ बड मारलौं हन।

केदार सिंह- ना मारी तँ पब्लिक कैसे बुझी। पब्लिक के बुझाना हाय जे हम पुलिस हाय। कुछ शो भी करना पड़ता हाय नऽ। जो ही कुछ देना है दे दऽ।

खट्टर- आइ हम किन्नौं नै देब। हमरा दवाइ कराबऽ पड़त।

केदार सिंह- जाउ साला सभ, जाउ। आज छोड़ देते हैं।

(शंकर आर खट्टर लड़खड़ाइत-लड़खड़ाइत अन्दर गेल।)

बदरी सिंह- केदार भाय, एगो गप बुझलिऐ हन की नहि, दारूक सम्बन्धमे?

केदार सिंह- नहि, की भेलै से?

बदरी सिंह- दारू बन्न भऽ गेल। हम भोरे पेपरमे पढ़लौं। हेन सरकार चाहै छैथ जे देवराज्यकेँ नीशा मुक्त करी। कारण ऐ सँ राज्यमे अनेक तरहक घटना दुर्घटना भऽ रहलै हन।

जेना- चोरी-डकैती, छीनरपनी, बैमानी, लूट-पाट, बलत्कारी इत्यादि। ऐ सभ तरहक शिकाइत सरकारकेँ बहुत भेलै हन। तही दुआरे सरकार नीशाँ मुक्तिक करगर कदम उठेलक हन। *(दुनू पुलिस कुरसीपर बैसलैथ।)*

केदार सिंह- कदम जदी सफल भऽ जेतैन तँ देवराज्य सरकारकेँ दुनियाँमे नीक प्रतिष्ठा भेटतैन। मुदा भाय, अपना सभकेँ बड़ दिक्कत भऽ जाएत। कारण ओइ बेगैर अपना सभकेँ एको दिन नै निमहत। अपना सभ ले सरकार किछु जोगार करतै, की नहि?

बदरी सिंह- उम्मीद कम आर भरोस ज्यादे। ओना पेपरमे दारू, ताड़ी, गाँजा, भाँग, खैनी, बीड़ी, सिकरेट, पान इत्यादिपर रोक लगाएल गेल हन। कारण सभ मे नीशा छै आर उ नीशा कोनो-ने-कोनो रूपमे देहक लेल नोकसानदायक अछि। जेना खैनीमे निकोटीन पएल जाइए जइसँ कैंसरक सम्भावना रहैए। ओही खैनीसँ बीड़ी, सिकरेट, पान मशाला इत्यादि बनैए। सोभाविक छै उ समान अपना सभकेँ नोकसान करत। दारूसँ फेफड़ा जरै छै, कीडनी फेल करै छै। गाँजासँ फेफड़ा जरै छै, दम्मा होइ छइ। ऐ तरहें हम कहि सकै छी जे प्राय: सभ नीशाबला पदार्थ देहक लेल खतरनाक अछि जेकरा तियागने स्वास्थ्यक रक्षा हएत।

केदार सिंह- भाय बदरी, सरकारकेँ जे करबाक हो, से करौ। मुदा हमरा ले दारूक जोगार सरकार करैत रहौ।

बदरी सिंह- अहाँ बताह जकाँ गप करै छी भाय। अहाँ आब दारूसँ छातीपर मुक्का मारि लिअ।

केदार सिंह- भाय, हमरा ओइ बेगैर नै बनत।

बदरी सिंह- किए नै बनतै? मनकेँ जेत्ते चसकेबै, मन ओते चसकतै। मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धनिक रहब। मने सभ किछु छिऐ। कोनो शायर कहने छथिन- मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय। मन उजियारा जब जब फैले, जग उजियारा होइ।

केदार सिंह- भाय, अहाँ केँ अध्यात्मिक ज्ञान बड़ अछि यौ।

बदरी सिंह- हमरा अध्यात्मिक ज्ञान सूइयाक नोको बरबैर नै अछि। ओना, समए निकालि करवनो-करवनो कोनो-कोनो अध्यात्मिक पोथी पढ़ि लै छी। सरकारक नीशा मुक्ति कदमक स्वागत करैत हम आइ संकल्प लै छी जे हम कोनो नीशा नै करब, नै करब, नै करब।

◌

पटाक्षेप।

दृश्य चारि

(स्थान- शंकरक घर। सुनैना सूपमे चाउर फटैक रहलए। सुन्नर आर शान्ति एक दिस तथा खखन आर चानी दोसर दिस भऽ कबड्डी खेल रहलए।)

सुन्नर- कबड्डी, कबड्डी, कबड्डी, कबड्डी, कबड्डीऽऽऽ।

खखन- चैत कबड्डी, चैत कबड्डी, चौत कबड्डी, चैत कबड्डीऽऽऽ।

शान्ति- कबड्डी कबड्डी, कबड्डी खेल।
घृणा त्यागि, राखू मेल।

चानी- चैत कबड्डी अड्डा, बाप तोहर बुड्ढ़ा।
तोड़ि देबौ नेंगरी, बना देबौ बोंगरी।

सुन्नर- चैत कबड्डी एला, माए तोहर लैला।
बाप तोहर मजलूम, तूँ बाबा मखदूमऽऽऽऽ

(खखन आर चानी सुन्नरकेँ टाँग पकैड़ घीचैए अपना दिस आर सुन्नर अड्डा दिस घीच कऽ लऽ जाइए। सुन्नरकेँ अड्डासँ पहिने साँस टुटि गेल। खखन आर चानी थोपड़ी बजा कऽ खूम हँसए लागल।)

खखन- कबड्डी कबड्डी, तोड़ि देबौ हड्डी।
निकालि देबौ पोंटा, मारबो दू सोंटाऽऽऽऽ।

(खखन शान्तिकेँ घीचने-घीचने पढ़ैत-पढ़ैत अपना घर लऽ गेल। फेर खखन आर चानी थोपड़ी बजा कऽ हँसए लागल।)

खखन- *(नचैत-नचैत)* हरा देलियौ, हरा देलियौ।

चानी- *(हारि गेलें हरूआ, खा ले गूँहके तरूआ।)* – 3

(चारू भाए-बहिनमे मारि फँसि गेल। सुन्नर-खखन आर शान्ति-चानी उट्ठम-पटका करैए। सुनैना चाउर फटकनाइ छोड़ि दौग कऽ आबि झगड़ा छोड़ाबऽ लगली। चारूकेँ दू-दू चाट दऽ कऽ सुनैना अलग-अलग केली। चारू हकमैत एक-दोसरपर कन्हुआ रहलए।)

सुनैना- तूँ सभ झगड़ा किए करै जाइ गेलें?

सुन्नर- तोहर बेटी हमरा किए कहलकौ- हारि गेलें हरूआ, खा ले गूँहक तरूआ? तीन बेर कहलकौ।

सुनैना- आब नै कहतौ। झगड़ा नै करै जाइ जो। भाए-बहिनमे झगड़ा करै जाइ जेबहीन तँ लोक बुड़बक कहतौ।

खखन- माए गै, पापा केतए रहै छै? काए दिनसँ घर पर नै देखै छिऐ।

सुनैना- केतौ रहौ सरधुआ। ओम्हरै मरि जाउ।

शान्ति- पापाकेँ गारि किए दइ छिहीन गै?

सुनैना- तोहर पापा ताड़ी-दारू-गाँजा पी कऽ बुच्च रहै छौ। अपना सबहक पेटक जोगार नै करै छौ। हमरा मजूरी कऽ पेटक जोगार करए पड़ैए। तोरा सबहक पढ़ैक जोगार नै करै छौ। दोकानदार सभकेँ उधारीबला पाइ नै दै छौ। अही सभसँ दिल बड दुखाएल अछि। तँए ओकरा गरियबै छिऐ।

शान्ति- ओहेन पापाकेँ हमहूँ गरियेबै। ओहेन पापाकेँसुपैन धारमे देबै, गजहर गाछमे सुतेबै।

(शंकरकेँ पकड़ने खट्टरक प्रवेश। खट्टर साधुक भेषमे अछि। शंकर एककातमे नीशामे ठाढ़ भऽ असथिरे-असथिरे हिलैए आर खट्टर ओकरा पकड़ने ठाढ़ अछि।)

खट्टर- दोसतीनी, दोसकेँ परसू साँझमे घुमैकाल एन.एच.पर एगो बोलेरोबला ठोकर मारि देलकै। हम उठा-पुठा कऽ टेम्पूमे लादि होस्पीटल लऽ गेलौं। डाक्टर जाँच-परतालक पछाइत कहलैन- हिनकर फेफड़ा जरल छैन आर किडनी सेहो फेल छैन। ई बहुत सिरियस छैथ। ई दू-चारि दिनक मेहमान रहि गेल छैथ। हिनका घरेपर लऽ जाउ।

सुनैना- अहाँ तँ एकरा बहसा कऽ तूल कऽ देलिऐ। दारू पीआ-पीआ जान लऽ लेलिऐ निशेवाज कहीं के।

खट्टर- दोस्तीनी, जहियासँ सरकार नीशा बन्न केलकै तहियासँ हम नीशेबाजी छोड़ि देलिऐ। बबाजी बनि गेलौं हन। देखै छिऐ, हमर बगे।

सुनैना- झूठा नहितन। देखबैले बबाजी भऽ गेल हन।

खट्टर- *(कण्ठी देखा छुबैत)* हम कण्ठी छुबै छी। झूठ नै कहै छी। हम सभटा नीशा छोड़ि देलौं।

(शंकर बैस गेल। खट्टर ठाढ़े रहल।)

सुनैना- तँ दोसोकेँ किए नै छोड़ा देलिऐ?

खट्टर- दोसकेँ हम कहलिऐ। मुदा ओ नइ मानलैथ। केना-ने-केना केतौ-ने-केतौसँ ऊपर कऽ कनी-मनी पीए लै छैथ।

सुनैना- अखनो तँ दोस पीनेए।

खट्टर- हमरो लगैए। हमरा आश्चर्य लगैए जे केना उपरा कऽ मारि दै छथिन।

सुनैना- *(खिसिया कऽ)* बड़ पीयाक छै तँ भने ओम्हरे होस्पीटलेमे मरि जइतै से नहि।

शंकर- *(खिसिया कऽ झूमैत)* तोरा बापक कमाइकेँ नै पीलौं हन। अपना कमा कऽ पीलौं हन। हमरा अपने बड़ मन खराप अछि। तैपर खिसियबैए।

खट्टर- दोसतीनी, हम जाइ छी। सोसराइरमे साइरकेँ बिहा छिऐ। दोसपर नीक जकाँ धियान देबइ।

(खट्टरक प्रस्थान।)

सुनैना- दारू-गाँजा पीऐत-पीऐत मन खराप कऽ लेलक हन। परिवारपर कोनो धियाने नहि। लेबरमे खटि-खटि हम कौहना पेट चलबै छी। एकरा एकर कोनो लाज नहि।

(शंकर टगि कऽ मरि गेल। सुनैना माए गै, बाप रौ चिचियाए लगल। चारू धिया-पुता सेहो खूम कानए लागल।)

केतए चलि गेलहक हौ सुन्नर पापा। केतए चलि गेलहक हौ शान्ति पापा। आब केना रहबै हौ चानी पापा।

◌

पटाक्षेप।

दृश्य पाँच

(स्थान- एन.एच. । नीशा मुक्ति हेतु मानव श्रृंखलाक पूर्ण तैयारी भऽ चुकल अछि। प्रधानाध्यापक शशिकान्त आर सहायक शिक्षक सोमदेव नीशा मुक्तिक सम्बन्धमे गप-सप्प करै छैथ।)

शशिकान्त- सोमदेव बाबू, देवराज्य सरकारकेँ नीशाबन्दी कानून बड़ नीक रहलैन। प्राय: सम्पूर्ण राज्य नीशा मुक्त भऽ गेल हन। दारू बाज सभ तँ छरपटाइए। मुदा केतौ दारू नै भेटैए ओकरा सभकेँ। दारूए-टा नहि, ताड़ी, भाँग, गाँजा, खैनी, बीड़ी, पान, सिकरेट सेहो बन्न भऽ गेल।

सोमदेव- सर, देवराज्य सरकारक ई कदम बहुत सराहनीय रहल। मुदा किछु हेहर, पतीत अखनो चोरा-नुका कऽ दारू-ताड़ी-गाँजा मारिए लै छइ। आखिर रजबुधिसँ चोरबुधि भारी होइ छै किने।

शशिकान्त- से जे हौउ। मुदा सरकारक ई नीशाबन्दी नीशामुक्ति कार्यक्रम 99 प्रतिशत सफल रहल। ऐ ले हम सरकारकेँ हार्दिक धैनवाद दै छिऐन। अहिना जदी सरकार अपराधपर नियंत्रण करै तँ देवराज्य देवलोक बनि जाएत।

सोमदेव- सरकारेक मन छिऐ। ऊहो भऽ सकैए। सर, अखैन धरि विद्यार्थी सभ नै जुटल हन। कहीं चेकमे अपना सभ पकड़ा नै जाइ।

सुनैना- पकड़ेबै किए? हाकिम नै बुझै छथिन ठंढाक समए छइ। सभ विद्यार्थी खा-पीब कऽ मजगूत भऽ कऽ आएत किने। कारण एन.एच.पर रौदमे ठाढ़ हुअ पड़तै। गाम-गामसँ विद्यार्थीकेँ पहुँचैमे कनी-मनी अबैर-सबेर हेबै करतै।

(सहायक शिक्षक अनूपक संग चन्दन, गुंजन, अमन, रानी आर महारानी अन्दरमे नारा लगा रहलए।)

चन्दन- ताड़ी-दारू बन्न करू। *(शशिकान्त सोमदेव उठि कऽ टहैल रहल छैथ।)*

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

(सभ कियो प्रवेश केलैथ। चन्दनक हाथमे झण्डा छैन। अनूप सभसँ पाछू छैथ झंडापर नीशामुक्त देवराज्य लिखल अछि।)

चन्दन- गाँजा-भाँग बन्न करू। *(घुमि-घुमि कऽ)*

सभ कियो- बन्न करू बन्न करू।

चन्दन- खैनी-बीड़ी बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

चन्दन- सिकरेट-पान बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

(अनूप सभ विद्यार्थीकेँ पतयानीमे लगेलैथ। सहायक शिक्षिका- सोनीक संग कपिलदेव, रामदेव, हरिदेव, ललिता आर कविता अन्दरमे नारा लगा रहलए। अनूप अपन टीम लग ठाढ़ छैथ।)

(शशिकान्त आर सोमदेवक प्रस्थान।)

कपिलदेव- ताड़ी-दारू, बन्न करू।

सभ कियो- नीरोग रहू, नीरोग रहू।

(सभ कियो प्रवेश केलैथ। कपिलदवेक हाथमे झण्डा छैन। सोनी सभसँ पाछू छैथ। झण्डापर नीशा हटाउ, देवराज्य बँचाउ लिखलए।)

कपिलदेव- गाँजा-भाँग बन्न करू। *(घुमि-घुमि कऽ)*

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- खैनी-बीड़ी बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- सिकरेट-पान बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- सुपारी-गुटका बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

(सोनी सभकेँ पतयानीमे लगेलैथ। सोनी अपन टीम लग ठाढ़ छैथ।)

अनूप- *(घुमि कऽ)* सभ गोरे ठाढ़ रह। ऊपरसँ हाकिम सभ एथिन। फोटो झीकैबला एथिन। फोटो झीका कऽ जाइ

जइहें। सभ कियो सटि-सटि कऽ ठाढ़ रह आर नारा लगबैत रह।

सोनी- *(घुमि कऽ)* जखन तोरा सभकेँ टाँग दुखा जेतौ तँ बैस जाइ जइहें। बिना फोटो झीकेने कोइ नइ जाइ जइहें।

कपिलदेव- नीशा हटाउ, नीशा हटाउ।

सभ कियो- राज्य बँचाउ, राज्य बँचाउ।

चन्दन- नीशा छोड़ू, पाय बँचाउ।

सभ कियो- धिया-पुता, पढ़ाउ-लिखाउ।

(एकाएकी सभ गोरे बैस गेल। रामशरण आर बच्चनक पानि लऽ कऽ प्रवेश। सभ गोरे ठाढ़ भऽ जाइ गेल। रामशरण आ बच्चन पानि बँटै छैथ। पानि बाँटि दुनू गोरे प्रस्थान केलैथ। रामलाल बिस्कुट लऽ कऽ प्रवेश केलैथ। रामलाल बिस्कुट बँटै छैथ। बिस्कुट बाँटि रामलालक प्रस्थान। राम बाबू आर ललनक चाह लऽ कऽ प्रवेश। ई दुनू गोरे चाह बँटै छैथ। चाह बाँटि दुनू गोरे प्रस्थान केलैथ।)

अनूप- चन्दन, नीशामुक्तिपर जे ऊ गीत तैयार केने छेलहीन से, गाबही ने।

चन्दन- जी सर, गाबै छिऐ।

(चन्दन आर रानी एक दिस झड़नी लऽ कऽ तथा गुंजन आर ललिता दोसर दिस झड़नी लऽ कऽ गीत गाबैले तैयार भेल।)

चन्दन+रानी- हॉएजीऽ ऽ ऽ ऽ, दारू-ताड़ी बन्न भेलइ।

बन्न भाँग गाँजा।

खैनी बीड़ी सिकरेट बन्न भेलैजी।

गुंजन+ललिता- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, गुटको पान सुपारी हटलै।

रोगी सभ निरोग भेलइ।

राज्य नीशामुक्त भेलैजी।

चन्दन+ललिता- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, चोरी हटलै डकैती घटलै अपराध बलत्कारी भगलै।

समुचित शिक्षा बढ़लै जी।

गुंजन+रानी- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, अनुशासन, शिष्टाचार एलै।

सुख-शान्ति बहार एलै।

सहानुभूति परेम बढ़लैजी।

चन्दन+रानी- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, आब नै कहियो नीशा औतै।

औतै सत्यानाश हेतै।

सम्हरल घर बिगैड़ जेतैजी।

गुंजन+ललिता- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, चोरबुद्धी भारी रहलै।

रजबुद्धी हल्लुक।

चोर उपरा कऽ पीतैजी।

(थोपड़ीक बौछार भेल।)

अनूप- *(फोन रिसिभ कऽ)* हेल्लो, सर प्रणाम। जी जी। जी सर। हम सभ तैयार छी। *(फोन कटि गेल)*

सोनीजी, अहाँ एक-एक हाथपर लाइन लगबा लिअ। हाकिम आर फोटोग्राफर आबि रहल छैथ।

सोनी- जी सर, हम लाइन लगबा लै छी। सभ कोइ एक-एक हाथपर लाइन लगबै जाइ जो।

(सोनी एक-एक हाथपर सभ विद्यार्थीकेँ लाइनमे लगेलैन।)

(शाशिकान्त आर सोमदेवक प्रवेश।)

चन्दन- नीशेवाजी बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- नीशा भगाउ, इज्जत बँचाउ।

सभ कियो- इज्जत बँचाउ, इज्जत बँचाउ।

(नीशाबन्दी कार्यक्रमक प्रखण्ड स्तरीय हाकिम बैचयुक्त महेश्वर आर फोटोग्राफार दिनेशक प्रवेश। महेश्वर निरीक्षण करै छैथ आर दिनेश फोटो झीकै छैथ।)

महेश्वर- अनूपजी आर सोनीजी, हमरा दुनू गोटेक गेला पछाइत अहूँ सभकेँछुट्टी। सरकारक नीशामुक्ति कार्यक्रम पूर्ण सफल रहल।

(महेश्वर आर दिनेशक प्रस्थान।)

अनूप- आब सभ विद्यार्थी अपन-अपन घर ओरिया कऽ जाइ जाइ जो। एन.एच. नीक जकाँ पार करिहें दुनू कात देख कऽ।

(सभ विद्यार्थीक प्रस्थान भेल। शशिकान्त, सोमदेव, अनूप आर सोनी हाथ जोड़ि प्रणाम कऽ मुड़ी झूका लेलैथ।) ◌

पटाक्षेप। इति शुभम।

बरहम बाबा

पात्र-परिचय

(1.)	बौकु-	एकटा गरीब किसान
(2.)	फूलो-	बौकुक पत्नी
(3.)	बुधन-	बौकुक पड़ोसी
(4.)	चानोदाइ-	पहिल कारणी
(5.)	रामबती-	दोसर कारणी
(6.)	बदरी-	पहिल दर्शक
(7.)	कारी-	दोसर दर्शक
(8.)	भूल्ला-	तेसर दर्शक
(9.)	अशर्फी-	चारिम दर्शक
(10.)	राम उदगार-	पॉचिम दर्शक
(11.)	मुसना-	बौकुक दू बर्खक बेटा
(12.)	राम कुमारी-	बौकुक बड़की बेटी
(13.)	रामपरी-	बौकुक छोटकी बेटी

दृश्य- एक

(स्थान- बरहम बाबाक गहबर। समए-सौंझका बौकु आ फूलो बरहम बाबाक पूजा ले सभ श्रमजानक संग उपस्थित छैथ। फूलो गहबर साफ कऽ रहली अछि। तखने बुधन मृदंग आ झालिक संग प्रवेश करैए।)

बुधन- भैया, बरहम बाबाक महिमा अगम अथाह छैन। सुनलौं, हुनके किरपासँ तोरा बेटा भेलह। मन बड़ हर्षित भेल। आब ठीक छह- दूगो बेटी आ एगो बेटा।

बौकु- हुनकासँ पैघ दुनियॉमे आर के? हिनका शरणमे जे कियो एला, हुनकर कल्याण आइ धरि भेल हन आ अग्रिमो हेबे करत। तँए ने हमर मुसना माए हुनक पूजामे जी-जान लगौने रहैए।

बुधन- भैया, तूँ केतेक दिनसँ भीख मॉगै छेलह?

बौकु- तीन पहिनासँ बेसीए बुझीन।

बुधन- ऐ बेर बरद नै ने बेचए पड़तह?

बौकु- से नै पूछ। ओइ बेरुका मारल अखैन धरि छी। होश नै भेल हन। ओइ बेर पनरह दिन भीख मॉगने रही। मुदा ऐबेर दुनू परानी तीन महिनासँ भीख ले कोन-कोन गाम नै बौआकेँ कोरामे लऽ कऽ वौएलौं। लगैए ऐ बेर नै घटतै। ओहीसँ पेटो चलै छेलए किने। सॉझू पहर घर चलि अबै छेलिऐ।

बुधन- अँए हौ, पूजा ले भीख माँगै छेलहक आ ओहीसँ पेटो चलबै छेलहक? ई नीक बात नै भेलह। अइसँ पुन नै पापे हेतह।

बौकु- की करबै, हमरा तँ और कोनो जोगार नै छेलए। बाबा नै बुझै छथिन जे हमरा भगतकेँ पाँच आदमीक पलिवार छइ।

(अपन-अपन डालीक संग चानोदाइ आ रामबतीक प्रवेश। पूजाक सभ तैयारी फूलो कऽ लेली अछि। बौकु झालि आ बुधन मृदंग बजबैत भगैत गाबि रहल अछि। फूलो ध्यानस्थ भेली। बदरी, कारी, भूल्ला, अशर्फी आ राम उदगारक प्रवेश। राम कुमारी कोरामे मुसनाकेँ लऽ कऽ प्रवेश केली। संगमे बहीन-रामपरी सेहो अछि।)

बौकु+बुधन- बरहम अँगनमामे, पीपरकेर गछिया हे।
तै पर देवी ऽ, दे ऽ वता हे।
बरहम अँगनमामे...।
कौन फूल चढ़ै देवी, कौन फूल देवता हे।
कौने फूल चढ़ै बरहम, बाऽ बाऽ हे।
बरहम अँगनमामे...।
अरहुल चढ़ै देवी, गेंदा फूल देवता हे।
गुलाब फूल चढ़ै बरहम, बाऽ बा हे।
बरहम अँगनमामे...।
फूल दीप मधुर देवी, लड्डु पान देवता हे।
खीर पूड़ी बरहम, बाऽ बा हे।

बरहम अँगनमामे... ।

(फूलोक देहपर बरहम बाबा अबै छथिन। मृदंग बजनाइ बन्न भऽ जाइए। सभ कारणी शान्त भऽ हाथ जोड़ि लइ छैथ।)

फूलो- बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, के छियह तूँ?

फूलो- बोल जय गंगा। हम बरहम छियह। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। बड़ी कालसँ कारणी सभ बैसल छइ। कनी एकरो सभकेँ कल्याण करहक।

फूलो- हम कोन जोकरक छी जे लोककेँ कल्याण करबै। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हम बुझै छिऐ किने तूँ कोन जोकरक छहक से। एत्ते दूरसँ जे कारणी अबै जाइ छै से बिन कल्याणे अबै छइ। तूँ हीरा छहक। हीरा अपन मोल नै बतबै छइ।

फूलो- बोल जय गंगा। हमरा बुत्ते जे हेतह तइमे हम नै चुबहक। सएह ने। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हे, ऐ कारणीकेँ देखहक।

फूलो- *(चानोदाइ दिस ताकि)* हइ, तोहर घरबला कमाइ बड़ छह मुदा भाभंश नै होइ छह। पाँच आदमीक परिवार छह। तीनि साए टाका रोज कमाइ छह। कहियो बैसलो नै रहै छह। मुदा पेटोपर आफद रहै छह। इएह बात छै की ने?

चानोदाइ- *(घोघ तरसँ मुड़ी डोलबैत)* हँ।

फूलो- हम जे कहबह, से करबहक की ने?

चानोदाइ- हँ, करबैन।

फूलो- सत्त करह। बाजह- 'एक सत्त दू सत्त, ब्रह्म विषुण सत्त अहॉक कहल जे नै करए, अस्सी कोस नरकमे खस।

चानोदाइ- एक सत्त दू सत्त, बह्म विषुण सत्त
अहॉक कहल जे नै करए, अस्सी कोस नरकमे खस।

फूलो- बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा।

फूलो- तोहर घरबला दारू आ गॉजा पीऐ छह। काजो करैले जाइ छह तँ पीकऽ बुच्च रहै छह। ओकरा करवैन की हेतह, कोनो ठेकान नहि। अँए हइ, तीन साए टाकामे दू साए-अढ़ाइ साएक पीए लेतह तँ बँचल-खोंचलसँ की भाभंश हेतह? तहूमे मँहगाइ अकास छूने जा रहल अछि। घरवलाकेँ कौहुना ई आदैत छोड़ाबह। कहक- 'दारू-गॉजाक बदलामे दूध-दही-घी खाउ। थकान ले हम सभ दिन मालिश कऽ देब।' आ करबो करहक। अइसँ पहिने तूँ कहियो मालिश नै करै छेलहक। की, बात सॉच छिऐ, की नइ?

चानोदाइ- हँ, सॉचे छिऐ।

फूलो- बोल जय गंगा।

बौकू- जय गंगा।

फूलो- घरवलाकेँ हँसा कऽ खेला कऽ मालिश कऽ आ ओकरामे पैस कऽ रसे-रसे कड़ाइ करबहक तँ उ अबस्स चेत

जेतह। उ सुधरतह आ तोहर सभटा दु:ख भागि जेतह। बाजह हमर कहल करबहक की ने?

चानोदाइ- हँ, अबस्स करबैन।

फूलो- जा, तोहर कल्याण हेबे करतह।

(हाथ जोड़ि प्रणाम कऽ चानोदाइक प्रस्थान।)

बोल जय गंगा। और के छह?

बौकु- *(रामबती दिस इशारा करैत)* सरकार, ई छथिन।

फूलो- बोल जय गंगा। तोहर दूटा बेटा आ एगो बेटी नै सुधैर रहल छह। हरदम नरहेर जकाँ एमहर-ओहमर करैत रहै छह। तीनूक पाछू तोरा बड़ पाय खरच होइ छह। मुदा कोइ रस्तापर नै आबि रहल छह। तोरा अपन दियादनीपर शक होइ छह जे वएह किछु कऽ देलक हन। सएह ने?

रामबती- *(मुँह उधारि)* हँ, बाबा। अपने अंतर्यामी छथिन बाबा।

फूलो- बोल जय गंगा। हइ, दियादनीक कोनो दोख नै छह। तोहर अपने दोख छह। तीन साल पहिने परमानन्द मासाएबसँ छअ महिना पढ़बा कऽ फील ले आइ-काल्हि, आइ-काल्हि करै छेलहक। एक दिन बेचारा खगने कनी जोरसँ पाय मॉगलखुन तँ तूँ सभ हुनका सातू पुरखाकेँ उकटलहक आ मारबो करै जाइ गेलहक। बेचारा कानि कऽ दुआरिपरसँ गेलह। हुनके आप छयह। कहह तँ वेचरा टीशन कऽके गुजर-बसर करै छथिन। बेचारा बड़

असथीर लोक छथिन। हुनका संग हुनके बोनि ले एहेन खराप बेवहार! ई बड़ पैघ गलती भेलह। बोल जय गंगा।

रामबती- बाबा, आब ओकर कोन उपाए छइ?

फूलो- बोल जय गंगा। *(कनीकाल किछु सोचि कऽ)* दुनू परानी हुनका ऐठाम जा कऽ पएर पकैड़ क्षमा मॉगहक। उ दयालु लोक छथिन अबस्स क्षमा कऽ देथुन। तेकर पछाइत हुनका बॉकी फीसक दोबर फीस दऽ दिहौन आ हुनकासँ अनुनय-विनय करीहक। जे धिया-पुताकेँ फेर पढ़ा दियौ। अहीं बुत्ते उ सभ सुधैर सकै छइ। आब अहॉकेँ नै छोड़ब आ ने अहॉ संग गलती करब। बोल जय गंगा। हइ, हमरा बिसवास छह जे उ मानि जेतह। जा, अक्खैन जा। उ घरेपर छथिन।

(हाथ जोड़ि प्रणाम कऽ रामबतीक प्रस्थान।)

बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, हम जे सकलियह तइमे जी-जान लगा कऽ पूजा केलियह आ एहिना करैत रहबह।

फूलो- बोल जय गंगा। हमर पूजा करै छह, नीक बात। मुदा हमरा पूजा खातिर तूँ बीकि जाह वा तकलीफ उठाबह वा प्रतिष्ठा हनन करह, से बात हमरा एक्को रत्ती पसीन नै छह। हम तोरा पूजासँ एक्केअना प्रसन्न छिअ। तोहर पूजा पनरहअना बेकार भेलह। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हम तँ जी-जान लगा पूजा केलियह जइसँ सरकार हमरापर सोलहन्नी खुश रहथिन आ मनसँ

असिरवाद देथिन। मुदा केतए की गलती भेलै, उ तँ सरकार अपने कहबै।

फूलो- हमरा पूजा खातिर तूँ बरद बेचलहक। से किए? आ जँ बरद रहितह तँ हरो जोति गुजर-बसर करितह। कहह तँ, केते दिन कमेबह तँ बरद कीनबह? तहूमे पेटोक सवाल छइ। गरीब किसान छह। बरद तोहर हाथ-पएर छह। बरद खातिर तोरा तकलीफ भऽ रहल छह। ओइसँ हमरो तकलीफ छह।

तूँ भीख माँगि पूजा करै छह से किए? अपन पसेनाक कमाइसँ पूजा करबहक तँ बेसी फल हेतह। भीख माँगि कऽ करैमे भीख देनिहार तोहर फल बाँटि लइ छह। कनी देरी वा बेसी देरी हेतै पूजामे, सएह ने? तँ की भऽ जेतइ? हम तँ केतौ भागल नै जा रहल छी। तहूमे बेसी खरचा करबाक कोन खगता छइ। हम खीरक भूखल नै छी। हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी। प्रेमसँ जे किछु भेलै आ जेतबे भेलै, वएह बड़ भेलइ। जी-जान लगेबाक कोनो खगता नै छै। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, दोसर बेरसँ ऐ सभ बातकेँ धियान रखबै। अखैन धरि जे किछु घट्टी-कुघट्टी भेल हो, ओकरा माफ करिहक।

फूलो- जा, माफ छह। आन बेरसँ लगती माफ नै हेतह। आब जाइ छिअ। केसटोलीमे पूजा ढारल छइ। बोल जय गंगा।

(फूलो धरतीपर माथ टेकलैथ। बौकु गंगाजल छींटलैथ। फूलो उठि देह-हाथ झाड़ि सम्हारि कऽ बैसली। दुनू परानी दर्शककेँ हाथ जोड़ि प्रणाम केलैथ। थोपड़ीक बौछार भेल।)

◌

इति शुभम्

घोघवाली कनियाँ

पात्र-परिचय : घोघवाली कनियाँ

1. सतन : एकटा साधारण किसान
2. ललिता : सतनक पत्नी
3. जीतन : सतनक बड़का बेटा
4. परदेशी : सतनक छोटका बेटा
5. रामरूप : समाजक प्रतिष्ठित बेकती
6. रामदाइ : जीतनक कनियाँ
7. रूपवती : परदेशीक कनियाँ
8. पलटू : सतनक पड़ोसी
9. राजू : सतनक पड़ोसी
10. लालू : सतनक पड़ोसी
11. हरी : सतनक पड़ोसी
12. शम्भू : सतनक पड़ोसी
13. विष्णुदेव : सरपंच
14. राम प्रसाद : सरपंचक ओकील
15. शशि : जीतनक बेटा
16. रूपन : परदेशीक बेटा
17. रमा : पहिल जनानी पुलिस
18. उमा : दोसर जनानी पुलिस
19. जाया : तेसर जनानी पुलिस

दृश्य- एक

(स्थान- सतनक दलान। सतन, सतनक पत्नी- ललिता, बड़का बेटा- जीतन, छोटका बेटा- परदेशी आ समाजक प्रतिष्ठित बेकती- रामरूप आपसी विचार-विमर्श ले बैसल छैथ।)

रामरूप- सतन भाय बाजह, की तकलीफ छह? किए बैसै जाइ गेलहक?

सतन- भाय, हमरा-तोरा परिवारिक सम्बन्ध छह। तँए तोरा बजेलियह जे हमरा दुनू परानीक निमरजन केना हएत? जहिया पैरुख छल तहिया देह धुनि पाँच कट्ठासँ पाँच बीघा जमीन बनेलौं। मुदा आब उ पैरुख केत्त ऽ? दवाइयो ले बेटा सभकेँ कहै छिऐ तँ दुनू एक-दोसरक नाओं कहैए। मारल जाइ छी हम दुनू परानी।

रामरूप- परदेशी, तूँ मिडिल इसकूलक मास्टर छिहिन आ जीतन हाई इसकूलक चपरासी। दुनू भाँइ पढ़ल-लिखल छेँ। तहन माता-पिताक संग एहेन घटिया बेवहार किए करै जाइ छिहिन? लोक सभ ई घटिया बेवहार बुझै जाइ जेथुन तँ की कहै जाइ जेथुन? मते-पिताक किरपासँ तूँ सभ नोकरी करै जाइ छेँ। नोकरी केना भेलौ आ केत्ते माल-मीटर लगलै से हम आ तोहर बाप जनै छी। मुदा आइ खोलि दइ छियौ- पूरे एक-एक लाख।

जीतन- हमरा जे कहब, से करैले तैयार छी कक्का।

परदेशी- हमहूँ तैयार छी कक्का। हम सभ नै हिनका सबहक देखभाल करबैन तँ के करतैन?

(परदेशीक कनियाँ रूपवती (घोघवाली) अन्दरसँ झाँकि रहल अछि।)

रामरूप- की हौ सतन भाय, दुनू बेटा तैयारे छह तँ आब तोरा कथीक चिन्ता?

सतन- कहने होइ छै की केने होइ छइ। कहब आ करतबमे बड़ अन्तर छइ। केना कऽ ई सभ रहत आ केना कऽ हमरा राखत से ने पुछहक। दुनू भीन होइले बरबैर हल्ला फसाद करैत रहैए। कहबै मिलि-जुलि कऽ चल, भीन-भीनौज नइ होइ जाइ जो तँ परिवारक विकास हेतौ से किए मानै जाइ जाएत..!

रामरूप- ई बात तँ ठीके कहै छहक जे मिलि-जुलि कऽ चललासँ परिवारक विकास हेतइ। जेना एकतामे बल होइ छै तहिना ओइ परिवारमे मजगुती रहतै। जीतन आ परदेशी बजै जाइ जो- की बढ़ियाँ हेतौ भीन-भीनौज आकि मिलि-जुलि कऽ चलनाइ?

जीतन- मिलि-जुलि कऽ चलनाइ बढ़ियाँ हेतइ।

परदेशी- मिले-जुलि कऽ चलबै।

रूपवती- *(अन्दरसँ)* हम नइ मानबैन, हम नइ मानबैन, हम नै मानबैन। हम भीने रहब। बीत-बीत-कैं सभटा बाँटि

लेबैन। बुढ़बा-बुढ़िया अपन हिस्सा लऽ लऽ जेतए रहौथ वा जेना रहौथ, तइसँ हमरा केनो मतलब नहि।

रामरूप- हौ सतन भाय, पुतौहजनी बड़ मुँहक जोर छह हौ। अइमे के कोनो बातक फैसला करतह? हम जाइ छियह। अपन अपनामे फरिछा लिहह।

सतन- जाहक नै, तूँ अपन उचित फैसला कऽ दहक, तहन जइहह। तेकर पछाइत जे मन फुरतै से करै जाइ जाएत।

रामरूप- भाय, तूँ अपन विचार बाजह तँ?

सतन- हमर विचार छह जे सभ किछु दूठाम बाँटि दहक आ हमरा दुनू परानीकेँ दुनूमे पार लगा दएह।

रामरूप- ई बढ़ियाँ नै हेतह। हमरा विचारसँ बढ़ियाँ ई हेतह जे तूँ अपन खोरीस, दवाइ, जेबी खर्च, आएल-गेल वा आन-आन आवश्यकता ले खेत राखि शेषकेँ दू ठाम बाँटि दहक। बात रहलै रहैक। तँ तीनटा कोठली छहे तइमे से एगोमे तूँ दुनू परानी रहिहह। दलानपर सबहक अधिकार रहतै। जखैन जेकरा जेहेन जरूरी हेतै से ओकर उपयोग करतै। तोहर सेवा-सुश्रुषा ले दुनू अपन सुविधानुसार महिना, दू महिना, छह महिना वा साल भरिक पार लगा लइ जाइ जेतइ। रहलै बात बेर-कुबेर, आफद-असमानीकेँ तँऽऽऽ दुनू मिलि कऽ पार लगेतै। की सतन भाय? की जीतन? की परदेशी?

सतन- हम सभ तोरा मानैत एलियह आ मानैत रहबह।

जीतन- काका, अहाँक फैसला मान्य अछि।

परदेशी- हमरो मान्य अछि। मुदाऽऽऽ।

रामरूप- मुदा की?

परदेशी- मुदा की बाजब कक्का। हारि मानै छी अपन कनियासँ।

रामरूप- कनियाँ छथिन तँ कनियाँ जकाँ ने रहथिन। तूँ परिवारक गाड़ीक चालक छिहिन। जेना गाड़ी हाँकबिहिन तेना चलतै। तोहर कहल उ नै करथिन तँ परिवार असन्तुलित भऽ जेतौ आ सदैत कलहमे रहै जाइ जेबेँ।

की आब हम जाइ? फैसला भऽ गेलै किने?

परदेशी- हँ भऽ गेलै काका। अहाँ जाउ।

(रामरूप उठि जाइले विदा भेला। तखने रूपवती नमहर घोघ तनने प्रवेश केली।)

रूपवती- एहेन फैसला हम नइ मानबैन, नइ मानबैन, नइ मानबैन। पहिने उचित फैसला करौथ तहन जइहैथ। नइ तँ कोनो करम बाँकी नइ रखबैन। हम बड़ बुरबक छी तँ अपना घरमे छी आ ई बड़ काबिल छैथ तँ अपना घरमे रहौथ गे। ई कोन फैसला भेलैन हिनकर जे बुढ़बा-बुढ़िया हिस्सा लगा कऽ खेतो लेतैथ आ आफत-असमानीमे हमरे सभकेँ देखए पड़त आ सेवा-सुश्रुषा करए पड़त।

रामरूप- बुढ़बा-बुढ़ियाकेँ गुजैर गेला पछाइत ओकर सबहक सभटा सम्पैत तोरे सभकेँ ने हेतह आकि हमर हएत। बेटापर बापक दाबी रहिते छै आ बापपर सेहो बेटाक दाबी रहै छइ।

रूपवती- हम दाबी नै सहबैन। हम दू ठाममे एकठाम लेबे करबैन।

रामरूप- तहन बुढ़बा-बुढ़ियाकेँ कोन बेवस्था हेतै?

रूपवती- से हिस्सा लैबला बुझतै। अइसँ तेहल्लाकेँ कोन मतलब?

(सबहक मुड़ी झूकि जाइ छैन।)

रामरूप- हौ सतन भाय, हम तोरा ऐठाम आबि बड़ पैघ गलती केलियह। गलतीकेँ क्षमा करियह। आब हम चललियह। तूँ सभ अपनेमे फरिछा लिहह।

(मुड़ी गोंतने रामरूपक प्रस्थान।)

सतन- एना किए हुनका बुरबक बनेलहक? घरमे जे होइ छै से होइ छइ। मुदा आनोठाम देखार भऽ जाइ छह!

रूपवती- जहरक पुड़िया तँ अहाँ सभ छी जे घरक इज्जत बाहर उघार केलौं। हुनका बजबैक कोन काज छेलए अहाँकेँ? हुनका अपन घर सम्हारले ने होइ छैन आ हमर घर सम्हारैले आएल छेलैथ।

सतन- हुनकर घरक बेवस्थाकेँ आन कियो ने दुषै छैन। तोरे मुहेँ आइ सुनलियह हेन। हुनका परिवारमे जे मिल्लत छैन, से भगवान सभ परिवारमे देथुन।

मुदा तोरा दुआरे रामरूप भाय लगैए हमरा ऐठाम पएरो नइ रखता। हुनका तूँ बेइज्जत कऽ देलहक।

रूपवती- करबैन नहि। और करबैन। जे सरधुआ सभ हमरा परिवारकेँ बाँटैले आएल हुनका अहिना सुआगत कऽ विदा करबैन।

सतन- बड़ नीक! तूहीं बाजह, की केना करबहक? जइसँ कियो दुषह नहि। अपनामे उट्ठम-पटका नै हुअ, झोंटा-झोंटावैल नइ हुअह।

रूपवती- हम किए किछु करबैन? गारजन छथिन ई आ फैसला करबैन हम। इहए फैसला करथुन जइसँ सभ घर अबाद रहइ।

सतन- खेत-पथार आधा-आधा कऽ लएह आ हमरा सभकेँ की करबहक?

रूपवती- हिनका सभकेँ की करबैन! एक-एक महिना दुनूमे रहथिन।

सतन- हारि मानी झगड़ा टूटए। तोरे सबहक विचार। हम सभ तँ पाकल आम भेलौं। बौआ जीतन आ परदेशी तोरा सबहक की विचार?

जीतन- हम किछु नै बजब। जँ बजब तँ मुँह नोचाउ। कुकुर बधिया के करत?

रूपवती- एकर माने हम कुकुर छी? *(खिसिया कऽ)* कुकुर तँ छैथ ई सभ जे अनकर ऐंठ खाइ छैथ आ आन दुआरि जाइ छैथ।

जीतन- *(हाथ जोड़ि)* सरकार, हम जे किछु बजलौं, गलती केलौं। माफ करू।

परदेशी- बोलीमे कनियोँ लसि नै अछि की?

रूपवती- चुप रहू। हम कोनो मरूआ-चिक्कस छी जे लसि नै रहत तँ रोटी नै पकत। अहाँ तँ और चौपट छी। मास्टर छी की

मास्टरक झड़ छी। से नै कहि। एहेन भतपेलबा मास्टर इसकूलमे की पढ़बैत हएत, से दैबे जानत आकि हमहीं जनै छी। जाउ अहाँ एतएसँ। फटर-फटर नै करू।

(परदेशीक प्रस्थान। पाछू लगल रूपवतीक प्रस्थान।)

जीतन- बाप रे बा, एहेन जनानी साए घर दुश्मनोकेँ भगवान नै दैथ। बाजब तँ की करत की नै, से नै कहि। माए-बापक संग दुनू भाँइमे आइ धरि मुहाँ-ठुट्ठी नै भेल। मुदा जहियासँ ई घोघवाली घर एली तहियासँ घरमे कहियो किनको चैन नै भेटैए। एहेन घोघ कोन काजक जे आगू कियो देखए नै आ पाछू खुजले रहए।

(रूपवतीक प्रवेश)

रूववती- हम कोनो बहीर नै छी। अहाँ सभ की सभ बजलौं, सभटा अपना कानसँ सुनलौं हेन। अच्छा, सभ किछुक उपाय छइ। आइए सीखा दै जाइ छी।

(रूपवतीक प्रस्थान)

सतन- कनी बरदासे कऽके रहै जाइ जो की करतौ की नइ..!

ललिता- हम बजैले नै चाहै छेलौं। मुदा नै बरदास भेल तँए बजै छी। ऑए यै जीतन बाउ, हमरासँ कहाँ केकरो मुहॉ-ठुट्ठी भेलै कहियो। मुदा ई छुलाछैन सभकेँ नाक-कान कटा देत। कथी खा कऽ माए जनमौलकै से नै कहि!

(रूपवती आ परदेशीक प्रवेश। दुनू खिसियाएल अछि।)

रूपवती- ई बुढ़िया जहरक पुड़िया अछि। हमरा जे कहलक से कहलक। मुदा हमरा माइयोकेँ उकैट देलक। एकर माए

कथी खाकऽ एकरा जनमौलकै? एकर माए डोमबाकेँ लऽ कऽ रहै छेलै। आ हमरो माएकेँ कोइ कहत।

ललिता- मुँह सम्हारि कऽ बाजू। बड़ चढ़ि-बढ़ि गेलौं हेन। हम एकरा की कहबै? हमर बेटे अछि पढ़ि-लिखि कऽ अमरूख। एकरा सामनेमे ई हमरा माएकेँ डोमबा लगा गारि देलक हेन। मुदा एक्कोबेर एकरा मुहसँ बोली फुटलै! ई बेटा छी आकि दुश्मन छी।

(परदेशी अन्दर चलि जाइए)

रूपवती- हँ हँ, बेटा दुश्मन छी। आइ दुश्मनसँ भेँट करा दै छी। एगो जे अछि जेठका ओकरो कोनो लाज नै छइ जे भाबोक संग कोन बेवहार करी। केना बाजल गेलै- 'एहेन घोघ कोन काजक जे आगू कियो देखए नै आ पाछू खुजले रहए।' ई कम भारी गारि भेलइ।

जीतन- जेतबे बुधि रहतह तेतबे बुझबहक किने।

रूपवती- हँ हँ ई सभ बेसी बुझैए आ हम बड़ बुरबक छी।

सतन- एकर कहबाक माने छै जे ऊपरमे फीट-फाट आ तरमे सिमरिया घाट।

रूपवती- *(खिसिया कऽ)* ई तँ और निरलज्ज अछि पतीत अछि। ई तँ अपने खच्चर अछि। जे सभ जनानीक इज्जत-आबरू उघार करैए।

सतन- हइ इज्जत-आबरू बला गप नै छइ। गप ई छै जे मुँह झँपने-उघारनेसँ लोक काबिल नै बनै छइ। काबिल बनै

छै नीक विचारसँ आ नीक बेवहारसँ, माने नीक नीक विचारपर चललासँ।

रूपवती- ईहो बेसी बुझै छइ। हमरा बेकूफ बनबै छइ। एकरा मने हम घोघ उघारने रहू जे ई हरदम हमर मुँह निहारैत रहत। ई बुढ़बा ठीके घोड़ा-गदहाक जनमल अछि।

सतन- *(आँखि लाल-पीयर करैत)* जो मौगी तोरा छोड़ि दइ छियौ। जुग-जमाना नीक नै छै तँए। नै तँ चरसा नापि लैतियौ।

रूपवती- रौ बुढ़बा मुँह सम्हारि कऽ बाज नै तँ सातू पुरखाक मुहमेऽऽऽ। बुझिलेऽऽऽ। तोरा अपना मौगीसँ सन्तोख नै होइ छौ जे हमरा मौगी कहै छैं।

सतन- *(हाथ जोड़ि कऽ)* हे गोड़ लगै छी। अन्दर जइयौ भाभट समेटियौ। अपने संसारक माता छिऐ।

रूववती- फेर मुँह सम्हारि कऽ बाजू। संसार लगा कऽ हमरा गारि देलौं हेन। अपने जे कहै छेलौं से बरदास करै छेलौं। मुदा संसार लगा कऽ गारि देलौं से बरदास नै करब। हैयए कहै छिऐ, भेँट करा दइ जाइ छी।

(रूपवती अन्दर जा कऽ परदेशीकेँ बजा आनलक। परदेशीक हाथमे मोटका लाठी अछि। परदेशी पूर्ण खिसियाएल अछि।)

परदेशी- कोन सार सभ, एकरा गारि देलहीन हेन, बेज्जैत केलहीन हेन। अक्खैन बाज, अक्खैन फरिया, बेटा तैयार छौ।

जीतन- परदेशी तूँ बाति गेलहीन हेन की?

परदेशी- हँ, हम बाति गेलौं। सार, तूँहीं सभटा झगड़ा लगौलेँ हेन। हरमजादा चोट्टा कहीं के।

जीतन- मुँह सम्हारि कऽ बाज नै तँ सभटा बतहपनी निकालि देबौ मारैत-मारैत। कोइ बाप काज नै देतौ।

परदेशी- सार आइ फरिया लेबौ। तूँ भैंसुर भऽ कऽ भाबोकेँ कोनो करम बाँकी नै रखलिहीन हेन। हरामी बच्चा कहीं के। *(पहिने परदेशी जीतनकेँ माथपर लाठी मारि देलक। जीतन बेहोश भऽ खसि पड़ल। ऊपरसँ उ और लठियबैए।)*

ललिता- *(छाती पीटैत)* दौगै जाइ जा लोक सभ, बेटाकेँ मारि देलक दुश्मनमा- 3,

(सतन छोड़बैले गेल तँ ओकरो माथपर लाठी मारि खसा देलक। रूपवती घोघ तरसँ देखि रहल अछि।)

दौगे जाइ जा लोक सभ हौ, बेटाकेँ मारि देलक, घरवालाकेँ मारि देलक दुश्मनमा।

(पलटू, राजू, लालू, हरी आ शम्भू बँचबैले दौगल। ललितो परदेशीक पएर पकैड़ लेलक।)

पएर पकड़ै छियौ परदेशिया। आबो छोड़ि दहीन-2

(सभ हाँ-हाँ करैए। पलटू आ राजू परदेशीकेँ भरि पाँज कऽ पकड़ैए। लालू आ हरी लाठी छीनैए। शम्भू पएर पकड़ैए मुदा परदेशी नै मानैए।)

परदेशी- आइ सार सभकेँ मारि देबै। हमरा कनियाकेँ सार सभ कोनो करम बाँकी नइ रखलक। आइ जान लऽ कऽ रहबै सार सभकेँ।

पलटू- कनियाँ,एक्केरत्ती मुहसँ बोलियो ने फुटैए जे मनाही करबै। छि:! छि:! लोक हँसत।

रूपवती- लोक किए हँसत? हम कोनो चोरी-छिनरपनी केलौं हेन। लोकक परिवारमे झगड़-दन होइ छै तँ हम सभ हुलकियो नइ दै छिऐ। मुदा हमरा ऐठाम लोक निछोहे दौगत, से किए। हम केकरो राजमे बसल छिऐ। यै रूपन पापा, आब छोड़ि दियौ।

(मारि-झगड़ बन्न भेल। सभ कियो हकैम रहलए।)

पलटू- परदेशी तोरा एना नै करबाक चाही। बड़ तकलीफ भेलौ तँ समाजकेँ बैसैबतेँ। सबसँ बड़ो समाज।

रूपवती- मुँह देख मुँगबा परसैले समाजकेँ बैसैबतिऐ की? जे भेलै से नीक भेलै आ कम भेलइ। आइ खीसा खतम करबाक छेलै। मुदा अहाँ सबहक प्रतिष्ठाकेँ देखैत खीसा एतै रूकि गेलइ।

पलटू- कनियाँ कनी बुधि-विवेकसँ काज लिअ, इज्जत भेटत।

रूपवती- हमरा केकरो सँ कम इज्जत अछि जे कियो एहेन बज्जर सनक कथा बजता।

पलटू- जे किछु बजलौं, घट्टी भेल। माफ करू आ भाभट समटू।

◌

पटाक्षेप

दृश्य- दू

(स्थान- सतनक दलान। सतन, ललिता, जीतन, परदेशी, पलटू, राजू, लालू, हरी, शम्भू, सरपंच- विष्णुदेव आ ओकील- रामप्रसाद पंचैती करैले उपस्थित छैथ।)

विष्णुदेव- की यौ सतन, अहाँ किए पंचैती बैसेलिऐ?

सतन- काल्हि अपन दुनू परानीक निमरजन ले अपने सभ बापुत बैसल रही। पड़ोसी रामरूप बाबूकेँ सेहो बजा अनने रही। हुनकर फैसला परदेशियाक घरवालीकेँ मनोमान्य नहि। वेचाराकेँ बुरबक बना विदा केली। जीतन बाजल- 'एहेन घोघ कोन काजक जे आगू कियो देखए नै आ पाछू खुजले रहए।' ऐपर हम बजलौं- 'ऊपरमे फीट-फाट आ तरमे सिमरिया घाट।' बस, इहए दुनू बात ले परदेशिया पत्नीसँ प्रेरित भऽ दुनू बापुतकेँ लाठीसँ मारलक। जदी ई सभ नै दौगतए तँ हमरा सभकेँ ई मारि दैतए। सूइया-दवाइ लेलौं हेन तँ आब कनी ठीक भेलौं हेन, इहए बात अछि।

विष्णुदेव- परदेशी, तूँ बाज। एना किए केलहीन?

परदेशी- भैंसुर आ ससुर भऽ कऽ ई सभ एहेन गप बजलैथ। की अहाँकेँ एहेन गप नीक लगैए?

विष्णुदेव- अमरूखकेँ ई गप खराप लागि सकैए। मुदा पढ़ल-लिखलकेँ खराप नै लगक चाही। गप बुझै आ पकड़ैक मोल छइ। ओइ गपक अस्स्ल भाव ई भेलै जे आदमी देखेलासँ आकि जमेलासँ नीक नै होइ छइ। बल्कि नीक होइ छै सिरिफ बेवहारसँ। तनकेँ केतबो धोलासॉ मनक पवित्रता नै होइ छइ। कहबी छै- मन चंगा तँ कठौतीमे गंगा। हमरा विचारसँ एकटा मास्टर भऽ कऽ तूँ बड़ पैघ गलती केलहीन। एकर तोरा जुर्माना लगतौ। की जुर्माना उचित छै कि अनुचित?

परदेशी- *(कनी सोचि कऽ)* उचित छइ। अपने जे कहबै से तैयार छी।

विष्णुदेव- की यौ सतन, दुनू बापुतकेँ दवाइमे केत्ते खर्च भेल? उचित बाजब।

सतन- एक हजार टाका लगल सरपंच साहैब।और लागत।

विष्णुदेव- परदेशी, दू हजार टाका तोरा जुर्माना लगतौ जे अक्खैन जमा कर।

परदेशी- जी, नेने अबै छी।

(परदेशी अन्दर जा कऽ दू हजार टाका आनि विष्णुदेवकेँ देलक।)

विष्णुदेव- बौआ परदेशी, आब कहियो आ केतौ जुर्माना नै लगौ तेकर पूरा धियान रखिहेँ। जुर्माना लगनाइ बड़ अधला बात भेलइ। *(पाइ सतनकेँ देलैथ। रूपवतीक प्रवेश)*

रूपवती- समाजक पंचैतीमे मुँह देख मुँगबा होइ छै से हमरा बुझले छेलए। भैंसुर-ससुर हमरा इज्जतकेँ उघार केलक तेकरा कोनो जुर्माना नै आ हम इज्जत ले लड़लौं तँ हमरा जुर्माना! सभसँ बुरबक मास्टरे होइ छै की? घुसहा सरपंच केहेन फैसला करत।

विष्णुदेव- जनानी छी, चुपचाप अन्दर चलि जाउ। नै तँ हमरा जेहल पठबैके सेहो पावर छइ। हमरा रामरूप नै बुझु। हम भेँट करा देब।

रूपवती- केकरो राजमे नै बसल छिऐ जे हमरा भेँट कराएत।

(तुरन्त रूपवतीक प्रस्थान।)

विष्णुदेव- जनानी मुँहफट्ट छइ। एकरासँ चेते कऽ रहनाइ ठीक। सतन बाबू आब बाजू, अहाँ की चाहै छी?

सतन- सरपंच साहैब, हमर दुनू परानीक निमरजनक बेवस्था लगा दिअ।

विष्णुदेव- जीतन आ परदेशी, तोरा सबहक की विचार?

जीतन- हमरा जे कहब, तइले तैयार छी।

परदेशी- अपने बड़ अनुभवी आदमी छिऐ। बुर्जुग छिऐ। अहाँक फैसलामे भगवानक बास रहतै। अपने जे करबै हमरा मान्य अछि।

विष्णुदेव- तूँ सभ हमरा बड़ पैघ भार सौंपि देलेँ। खाएर हम अपना भरि सबहक कल्याण आ आपसी सामंजसक फैसला करबौ। नै मनोमान्य होइ जाइ जेतौ तँ कोर्टसँ फरिया लिहेँ। *(किछु सोचि कऽ)* हमर फैसला सुन-

(1.) खेत-पथार दुनू भाँइ आधा-आधा लऽ ले।

(2.) बुढ़बा-बुढ़ियाकेँ एक-एक मासक पार लगा ले।

(3.) चाह-पान आ आन जेबी खरच ले अपन-अपन पारमे एक-एक हजार टाका दहीन।

(4.) कपड़ा-लत्तामे दुनूकेँ बरबैर पाइ लगतौ।

(5.) भोजनमे जे कण-साग अपने खइहेँ से हिनको दइ जाइ जैहैन।

(6.) हजार टकाक अतिरिक्त कोनो विशेष काज ले एक साए धरि अपन-अपन पारमे दिहैन। अइसँ बेसीमे आधा-आधा दिहैन।

(7.) जदी हिनका बैंकमे कोनो तरहक पाइ वा गहना-गुड़िया जमा होइन तँ कोनो जोगार लगा वा नै तँ खाता बन्न कऽ सम्पतैमे आधा-आधा कऽ देथिन।

(8.) दुनू परानी समयपर सुतथिन सेहो आठ घन्टासँ बेसी नहि।

(9.) बेसीकाल बैसल नै रहथिन। अपन अर-अपेक्षितसँ मिलैत-जुलैत रहथिन।

(10.) प्रतिदिन खेत-पथार दिस जेथिन आ ओइमे त्रुटिक पूर्ति करथिन वा करेथिन।

(11.) जीतन दिस रहथिन तँ हुनकर धिया-पुता,माल-जाल आ आन बौसक देखरेख करथिन। विशेष परिस्थितिमे परदेशीक धिया-पुता, माल-जाल आ आन बौसक देखरेख करए पड़तैन। तइमे जीतनकेँ कनियोँ

तकलीफ नइ हेबाक चाही। तहिना परदेशी दिस रहथिन तँ हिनका सभकेँ करए पड़तैन जइमे जीतनकेँ कोनो तकलीफ नै हेबा चाही।

(12.) साधारण मन खरापमे अपन-अपन पारमे इलाज करबै जाइ जेतै। मुदा विशेषमे (500 टाकासँ बेसी खर्चबला) दुनूकेँ हिस्सा बरबैर लगतैन आ ओइमे दुनूकेँ समय दिअ पड़तैन।

(13.) हिनकर सेवा-सुश्रुषा अपन-अपन पारमे हर्षित मने सपरिवार करथिन।

(14.) दुनू भाँइ दिससँ कोनो एहेन गप नै हुअए जइसँ हिनका सभकेँ हार्दिक तकलीफ होइन। हँ, हिनको सभकेँ चढ़ा-उतरीबला गप नै बजक छैन।

(15.) परिवारमे कनी-कनी घट्टी-कुघट्टीकेँ हिनका सभकेँ घँटोसए पड़तैन।

(16.) सझिया कुटुमक भोजन बेवस्था जेमहर बुढ़ा-बुढ़ी रहथिन तेमहर हेतइ। मुदा हुनक विदाइमे दुनू भाँइकेँ बरबैर खर्च लगतैन।

(17.) दुनू भाँइकेँ भीन रहनौ एहेन ताल-मेल रहैन जे किनको ई बुझाइन जे दुनू भीन नै अछि।

(18.) तीनू चालककेँ अपन-अपन गड़ी एना हाँकए पड़तैन जे अपने, गड़ी आर सवारी पूर्ण सुरक्षित रहै, जिनकर प्रशंसा करैत सवारी अधाइ नहि।

(19.) दुनू भाँइ एक-दोसरक आवश्यक काजमे आर्थिक सहयोग बिनु सूदिक करतै।

(20.) प्रत्येक पारमे जाइत मातर हिनका सभकेँ बिनु मँगने एक हजार टाका भेट जाइन।

(21.) प्रत्येक वर्ष दू साए टाका वृद्धि हेबाक चाही।

(22.) विशेष परिस्थितिमे बान्हल टाकासँ बेसी खर्च ले बुढ़बाकेँ माँगए पड़तैन। की यौ सतन? की जीतन? की परदेशी? हमर इएह फैसला भेल। अइमे किनको कोनो तरहक दिक्कत अछि तँ बजै जाउ। ओकर समाधान हेतइ।

सतन- पहिने ई दुनू भाँइ बाजए।

जीतन- हमरा कोनो दिक्कत नै अछि। हमरा मनोमान्य अछि।

परदेशी- हमरो मनोमान्य अछि। ई लागू कहियासँ हेतइ।

विष्णुदेव- आइयोसँ भऽ सकै छइ। वा काल्हियोसँ भऽ सकै छइ। पहिने एतुक्का आ अखुनका विधि खतम हेतै तहिन ने। ओकील साहैब, हिनका सबहक कागत बनाउ आ दसखत कराउ।

रामप्रसाद- जी सर, लिखैसँ पहिने एकबेर हमहूँ पूछि लइ छिऐन। किनको कोनो तरहक असोकर्ज अछि तँ अक्खैन बाजू पछाइत कोनो बदलाव नै हएत। बढ़ियासँ सोचि लइ जाइ जाउ।

(कनीकाल एकदम शान्त माहौल रहैए।)

विष्णुदेव- ई सभ किछु नै बजै छैथ। एकर माने स्पष्ट अछि जे पंचैती सभकेँ मनोमान्य छैन।

सतन- हमरा नजैरमे ऐ पंचैतीसँ दूध-पानि बेरा गेल। एहेन पंचैती जे सगरो होइतै तँ दुनियामे राम राज्य स्थापित भऽ जइतै।

रामप्रसाद- हमर सर घुसहा सरपंच छैथ। ई की पंचैती करता।

सतन- ओकील साहैब,अधजल गगरी छलकत जाए।

रामप्रसाद- सर, आज्ञा होइ तँ कागज लिखी।

विष्णुदेव- अज्ञे आज्ञा अछि।

(राम प्रसाद कागज लिखलैन।)

रामप्रसाद- पहिने दुनू भाँइ दसखत करू।

(दुनू भाँइ केलैन)

हिनकर पिताजी दसखत करथिन।

(सतन दसखत केलैन)

बैसारमे उपस्थित सभ लोकैन दसखत करै जाइ जाउ।

(सभ दसखत केलैन)

विष्णुदेव- लाउ, हमहूँ कए दइ छी।

(विष्णुदेव दसखत केलैन।)

(अन्तमे रामप्रसाद दसखत कऽ मोहर मारि कार्बन-कॉपीबला पन्ना सतनकेँ दऽ देलखिन आ मूल पन्ना अपने लग रखि लेलैन।)

ऐ कागतकेँ फोटोस्टेट करा तीनू बापुत एगो-एगो रखि लेब जे समय एलापर काज देत। ई कागत काल्हिसँ लागू हएत। पहिने बुढ़ा-बुढ़ीक भार के उठौता?

(रूपवतीक प्रवेश)

रूपवती- पहिने हम नै उठेबैन। से हम कहि दइ छिऐन।

परदेशी- कथी ले ओत्ते देखार-चिन्हार करै छी। पहिने हमरेमे रहि जाइ जेतै। एकर पछाइत तँ ओम्हरौक पारी हेतै। एमहर आकि ओमहर बात बरबैर छइ।

रूपवती- अहाँ सभ दिन भतपेलबाक भतपेलबा रहिए गेलौं! जाउ की कहब! अपना-अपना ले दुनियाँ हरान छइ। मुदा अहाँ अनके ले हरान छी। एहेन भोंदू मास्टरकेँ कोइ ठकि लेत।

परदेशी- *(ठाढ़ भऽ खिसिया कऽ)* हरमजादी, सभ दिन मचण्डक-मचण्डे रहि गेलेँ। अक्खैन अन्दर जो नै तँ जूतासँ चरसा नापि लेबौ।

रूपवती- *(जूत्ती देखबैत)* रौ भतपेलबा, हमरो जूत्ती छइ। देख लहीन। कोनो बाप काज नै देतौ।

(परदेशी जूता निकालि रूपवतीकेँ मारैले दौगल। मुदा राम प्रसाद परदेशीकेँ पकैड़ लेलैन मुदा रूपवती अड़ले रहली।)

रामप्रसाद- कनियाँ अहाँ अन्दर जाउ। विचार करै जाइ छी, नै हेतै तँ पहिने बेर बुढ़ा-बुढ़ी जीतने दिस रहि जेथिन। बात एक्के

भेलइ। की जीतन, पहिल बेर बुढ़ा-बुढ़ीकेँ अहीं रखि लियौन। हारि मानी झगड़ा टूटए।

जीतन- बेस, राखि लेबैन। *(रूपवतीक प्रस्थान)*

विष्णुदेव- काल्हिसँ अहाँ दुनू परानी जीतन दिस रहै जाइ जेबै। आब हमरा सभकेँ आज्ञा देल जाउ। हाइ इसकूलपर सेहो पंचैती छइ। समय भऽ गेल अछि।

सतन- *(हाथ जोड़ि)* अपने धन्य छैन सरकार।

(विष्णुदेव आ रामप्रसादक प्रस्थान) बाप रे बा, उ एत्ते अनुभवी छथिन, से नै बुझल छल।

◌

पटाक्षेप

दृश्य- तीन

(जीतनक कोठली। जीतन आ जीतनक पत्नी- रामदाइ आपसी गप-सप्प करै छैथ। रामदाइ मुँह उघारने अछि।)

जीतन- जे होइ छै, से नीके होइ छइ।

रामदाइ- से केना?

जीतन- एत्ते बात नै होइतै तँ सही रस्ता नै निकैलतै।

रामदाइ- एकर माने सभकेँ मारि दइतै तँ ऊहो नीक होइतै।

जीतन- नै, से तँ नीक नै होइतै।

रामदाइ- अपना भरि उ अहाँ दुनू बापुतकेँ मारिए ने देलखिन यौ?

जीतन- हँ, से तँ मारिए देने छल।

रामदाइ- तहन जे होइ छै से नीके केना। दुनू भाँइ पढ़ल-लिखल छी तइमे जे किछु भेल बड़ खराप भेल। बिन झगड़े प्राय: कोनो समस्याक समाधान नै होइ छै की?

जीतन- अबस्स होइ छै आ होइतै। मुदा की करबै उ हराशंखनी घरमे आगि लगा देने अछि। पहिने केहेन मिल्लत रहए। मुदा आब लोक हँसैए। हे, अहाँ नै ओकरा जकाँ हएब। नै तँ माथक एक्कोटा केश नै रहए देती। कनी बरदासे कऽके रहब।

रामदाइ- बरदास केनहे छी की। नइ तँ ऐ परिवारमे की-सँ-की भऽ गेल रहितए।

रूपवती- *(अन्दरसँ)* हम केकरो नै टोकै छिऐ, नै चालै छिऐ। हमर इन्ना-मीन्ना कियो कए करत? जे हमरा हराशंखनी कहलक हेन, ओकरा सातू पुरखाक मुँहमे जे नै करबाक चाही से करबै।

रामदाइ- शशि पप्पा, कनी बाबूकेँ देखयौन केमहर गेलखिन। जलखै करथीन।

(जीतनअपन पिता-सतनकेँ ताकैले गेला।)

नैहरामे जेना बाप-माए तहिना सोसरामे सौस-ससुर। मानू तँ देव नै तँ पाथर। हमरा जनैत जे नैहरा जकाँ सोसरामे बेवहार करत तँ झगड़ा-दन किए हेतै?

(जीतनक संग सतनक प्रवेश। रामदाइ सतनकेँ पानि पीढ़िया देली। फेर जलखै आनि कऽ देली। सतन जलखै करै छैथ–रोटी आ अल्लुक भुजिया।)

बाबू, किछु लेथिन?

सतन- किछु नहि। *(सतन जलखै कऽ उठि गेला।)*

रामदाइ- शशि पप्पा, कनी माएकेँ देखयौन। ऊहो जलखै करथिन।

जीतन- देखै छिऐ।

(जीतन अन्दर जा कऽ माएकेँ बजा अनै छैथ। रामदाइ हुनका पानि-पीढ़िया-जलखै देली। ओ कनी अढ़ भऽ कऽ जलखै करै छैथ।)

ऐ शशि मम्मी, खाली खेनाइए टासँ प्रतिष्ठा नै होइ छइ। आरो किछु-किछु वीध करए पड़ै छइ। कथी-कथी? से बुझल अछि?

रामदाइ- हँ यौ, सेवा-सुश्रुषा।

जीतन- आरो कथी?

रामदाइ- *(मन पाड़ैत)* नै बुझल अछि। अहीं कहू।

जीतन- मधुर वचन आ मधुर बेवहार।

रामदाइ- से केना? कनी बुझा दिअ।

जीतन- केकरो खाइले दऽ देलिऐ आ ऊपरसँ बज्जर सनक कथा बाजि देलिऐ। वा गारि पढ़ि देलिऐ वा उकटा-पैंची करए लगलिऐ।तँ खाइले देलाक कोनो साफल नै भेल। यानी कोनो सेवामे प्रेम-श्रद्धा नै छै तँ सेवा बेकार।

रामदाइ- हँ, आब बुझलिऐ। माए, किछु लेथिन?

ललिता- किछु नइ।

रामदाइ- माए हम अपना भरि हिनका सबहक सेवामे नै चुकबैन। मुदा धोखा-धोखी कोनो चीज ले हुसि जाइ तँ अबस्स मन पाड़ि दिहैथ। मने-मन गुड़ चाउर फँकलासँ खरापी होइ छइ। हम अमरूख छी। किछु बुझै तँ नै छी।

ललिता- नै हइ कनियाँ, एकहकटा अमरूख पढ़लो-लिखलोकेँ कान काटि लइ छइ। बौआ, आइ इसकूल नै जेबै की? छुट्टी अछि की?

जीतन- नै माए, छुट्टी नै छइ। आब जा रहल छिऐ।

रामदाइ- जेबै तँ जेबै, की आनठियौने छिऐ। समैपर जेबै तहन हेडमास्टर किए किछु कहता। करब देरी अपने आ बात-कैहनी कहब हमरा। जाउ जाउ, जल्दी जाउ।

जीतन- बेसी कहब तँ जेबे नै करब। से बुझि लिअ।

रामदाइ- से किए?

जीतन- *(मुस्कियाइत)* हमरा अहाँक गप्प सुनैमे बड़ नीक लगैए।

रामदाइ- दूर जाउ, हरदम देखार-चिन्हारबला गप्प करै छी।

जीतन- मन तँ नइ होइए मुदा छी तँ सरकारक नोकर। नोकरी करहे पड़त। तहन ने पेट भरतै। हइए चललौं।

(जीतनक प्रस्थान। ललिता जलखै कऽ हाथ धोइ छिपली उठबऽ लगली।)

रामदाइ- हॉ, हॉ, हॉ, हॉ..! ई छोड़ि देथुन। हम कथी ले छिऐ?

(ललिता छिपली छोड़ि उठि गेली। रामदाइ दुनू छिपली उठा धोइ कऽ अन्दर जा रखि एली।)

ललिता- हइ कनियॉ, एगो गप पूछियह?

रामदाइ- पुछौथ ने।

ललिता- हइ डर होइए से, केतौसँ सुनि लेत तँ?

रामदाइ- गप जँ चढ़ा-उतरीबला नै हेतै वा खराप नै हेतै तँ सुनिए कऽ की करतै।

ललिता- नै, से तँ खराप नै छइ।

रामदाइ- तँ कहथीन ने?

ललिता- *(कनफुस्की जकाँ)* हइ, छोटकी कनियॉ पढ़ल-लिखल छै की नहि?

रामदाइ- हँ छै की, कहाँदुन मैट्रिक पास छइ। हिनके बेटा तँ हमरा कहने छेलखिन।

ललिता- अइ, पढ़ल-लिखल जकाँ बेवहार कहाँ छइ? मचण्ड जकाँ करै छइ।

रामदाइ- ई सभ गप नै बाजौथ। जँ केतौसँ सुनतैन तँ बीख भऽ जेतैन।

(रूपवतीक प्रवेश। आधा-मुँह उघरल आ आधा झाँपल अछि।)

रूपवती- हम पढ़ल-लिखल छी आकि मुरुख छी। तइसँ अहाँ सभकेँ कोन मतलब अछि? हमर इन्ना-मिन्ना जे कोइ करत, ओकरा बाप-माए, दादा-दादी आ नाना-नानीक सारापर जा कऽ जे नै करबाक चाही से करबै।नै तँ अपन-अपन मुँहमे ताला लगबै जाइ जाए।

(मुँह चमका कऽ प्रस्थान।)

ललिता- हइ, हमरा शक होइ छेलए। सएह भेल।

रामदाइ- हम कहने रहियैन ने जे ई सभ नै बाजौथ। माए यै, बाबूकेँ देखथुहुन, केतए छथिन खेनाइ खा लेथिन।

ललिता- देखै छिऐ। *(ललिताक प्रस्थान। दस बरर्वक शशिक प्रवेश।)*

शशि- माए गै, दादीकेँ तूँ किछु खराप बात कहलिहीन हेन। देखलिऐ पोखैर दिस निछोहे भागल जाइत?

रामदाइ- बाबाकेँ तकैले गेलखिन हेन। खाइक बेर भऽ गेलै ने।

शशि- नै गइ माए, दादी झाड़ा फिरैले गेलइ। बड़ रेशमे जाइ छेलइ।

रामदाइ- *(दाढ़ी पकैड़)* बौआ, दादीकेँ एहेन बात नै कहक चाही। लोक हँसतौ। जनानी ले ई गप लाजबला भेलइ।

शशि- हम दादीकेँ कोनो गारि देलिऐ हेन जे लाजबला गप भेलइ।

रामदाइ- बौआ, गारि तँ देबो नै करिहक। नै तँ चटकनो लगतह। तूँ दूरा दिस छेलहक, बाबाकेँ देखबो केलहक ओमहर?

शशि- हँ छेलै, छोटका बाबाक दलानपर।

रामदाइ- जा, बजौने आबहक। कहिहक खाइले चलू। *(दौग कऽ शशिक प्रस्थान। ललिताक प्रवेश।)* शशि कहै छेलइ दादी बड़ रेशमे झाड़ा फिरैले गेलइ।

ललिता- *(मुस्कियाइत)* की हेतै, कहलकै तँ? धिया-पुता अछि। अखैन उ-सभ नअ-छअ नै ने बुझै छइ।

(शशिक संग सतनक प्रवेश।)

केतए गेल छेलिऐ? सगरोसँ ताकि एलौं हेन।

सतन- छोटकाक दलानपर गप-सप्प करैत रही। की भेलै से?

ललिता- खाइक बेर नै भेलै हेन? *(शशिक प्रस्थान।)*

सतन- भेलै हन की।

(रामदाइ पानि-पीढ़िया देली। सतन बैसला)

ललिता- अहाँ दुआरे हम आ कनियाँ भुखले छी। कनी बेरो देख लियौ।

सतन- की करबै? ओतए कोनो एहेन गप उठि गेल रहइ। ओहीमे फँसल रही।

(रामदाइ खेनाइ आनि कऽ देली। सतन खाइ छैथ।)

कनिया, औझका खेनाइ जे सुआदिष्ट अछि से मति पूछू।

रामदाइ- हमरा जहिना बनाएल हएत तहिना ने बनाएब।

सतन- 'राग रसोइया पागड़ी कभी-कभी बन जात' अइमे औझका नाओं कऽ गेल अछि। मन होइए एक महिनाक खेनाइ आइए खा ली।

रामदाइ- खौथ ने, जेत्ते खेथिन ओइसँ बेसी छइ।

ललिता- खाइक मन अछि तँ खा लिअ। नै तँ लेर चुअत।

रामदाइ- *(मुस्कियाइत)* माए ओते ने कहथुन, हम छिऐन।

ललिता- हम कोनो खराप बात कहलिऐ हेन। खुएनाइ तँ अपना सबहक करतब अदि। मुदा एगो गपक डर अछि जे डायरेक्ट ने भऽ जाइन जे हरदम गाछीए ओगरने रहैथ।

सतन- हे लिअ, छोड़िए दइ छी।

(खा कऽ हाथ दोइ उठि गेला।)

रामदाइ- खाइ काल एहेन गप नै बजक चाही। खेनहारकेँ घृणा भऽ जाइ छइ। भरि मन खेबो नै केलखिन आ उठि गेलखिन।

ललिता- मजाक केलिऐ।

सतन- से हम बुझि गेलिऐ। हम भरि मन खेलौं। पेटसँ चोरि नै करै छिऐ आ ने केकरो करक चाही।

(सतनक प्रस्थान।)

रामदाइ- माए, ईहो खा लौथ।

ललिता- हम एतए नै खाएब। लोक सभ की कहता? जाइ छी हम अपने लऽ कऽ खा लेब।

रामदाइ- से किए? हमरा देलहासँ पेट नै भरै छैन की?

ललिता- नै कनियाँ, से बात नै छइ। कहियो उपराग देलियह हेन?

रामदाइ- से तँ कहियो नइ।

ललिता- देखहक, अखैन हमरा पैरुख अछि। लैयौ कऽ खा सकै छी। देलहो खा सकै छी। केतौ जैयो कऽ खा सकै छी। अइमे तकलीफक कोनो बात नहि। तकलीफ होइ छै ओतए, जेतए सुमैत नै रहै छइ। कुमैतसँ ईर्ष्या-द्वेषक जनम होइ छइ।

(ललिताक प्रस्थान)

रामदाइ- अखैन धरि शशिक पप्पा नै एलखिन। आनदिन ऐ बेर आबि गेल रहै छेलखिन। लगैए, केतौ रस्तामे गप-सप्पमे फँसि गेल हेथिन। छथिन ईचना माछ ने जे केतौ लटपटा गेल।

(जीतनक प्रवेश।)

केतए देरी लागि गेल? आन दिन सबेरे आबि जाइ छेलिऐ।

जीतन- अच्छा, कहै छी। पहिने ई कहू जे माए-बाबू खेलखिन?

रामदाइ- हँ खेलखिन।

जीतन- हँ आब कहै छी देरी दऽ। अपन दोस कक्का छथिन ने। हुनकर पुतौह मटियातेल देहपर ढारि कऽ आगि लगा मरि गेली। पुलीस सभ आएल रहइ। सएह देखै छेलौं।

रामदाइ- बाप रे बा, एहेन सड़ल काज नै करू। जुग-जमाना नीक नै छइ। सभकेँ हित-मुद्दै होइ छइ। जौं कोइ फँसेलक तँ खिचड़ी खाइत रहब। केकर खेती केकर गाए, कोन पापी रोमए जाए। कान पकड़ू एहेन कुकुर-बधिया नै करब। छोड़ू ई गप-सप्प। पहिने खेनाइ खाउ। भूख लगल हएत।

(रामदाइ पानि-पीढ़ी-खेनाइ देली। जीतन खेनाइ खाइ छैथ। बगलमे बैस बेना हौंक रहली अछि।)

शशि पप्पा, औझका खेनाइ केहेन अछि?

जीतन- औझका खेनाइ सभ दिनसँ खराप अछि।

रामदाइ- ऑइ, बाबू कहलखिन जे 'औझका खेनाइ तेते सुआदिष्ट अछि जे मन होइए एक महिनाक खेनाइ आइए खा ली।'

जीतन- बाबूक बातक भाव अहाँ नै बुझि सकलिऐ। हुनक भाव छेलैन जे ऐगला दिनसँ एहेन खेनाइ नै बनबैथ। सुआदिष्ट खेनाइ बनाबैथ। खेनाइ बनबैकाल सावधान रहैथ। हड़बड़ीमे गड़बड़ी भऽ जाइ छइ।

रामदाइ- कहू ने, की खरापी छइ?

जीतन- दालिमे नून पड़ले ने अछि आ तरकारीमे खाली नून आ मेरचाइ अछि। काल्हि भिनसर केते भकभकाएत केते नइ। तइ डरे हम कम्मे खाएब। अखनसँ राति धरि अहीं

खाउ आ काल्हि बुझबै मेरचाइक बुकनी एक दिस रहत आ अल्लूक छिलका एक दिस। हे, शशिकेँ ई खेनाइ नै ने देलिऐ?

(खाइ छैथ आ नाक झाड़ि पोछै छैथ।)

रामदाइ- खेलक की। एक कौर खाइ छल आ एक घोंट पानि पीबै छल। हमरा भेल जे ओकरा पपियाहा भऽ गेल छइ।

जीतन- नै यइ, ओकरा तँ रातियेसँ ने फुचुक्का मारए लगइ। आइ दिनसँ एहेन खेनाइ नै बनाएब। से कहि दइ छी। एहेन खेनाइ बेमारीक जड़ि छी। तहूमे गैस्टिककक परपपिता।

रामदाइ- आइ दिनसँ एहेन खेनाइ नै बनाएब, से सत्करै छी।

जीतन- अच्छा, एगो कहू जे अहाँकेँ खेनाइ केहेन लागल?

रामदाइ- हम खेनाइ कहाँ खेलिऐ। अहाँ नै खेने रहिऐ तँ हम केना खा लैतिऐ?

जीतन- तै दुआरे सुखा कऽ हरीर भेल जा रहल छी। मिथिलाक मौगीकेँ ई बेमारी कहिया छुटतै से नै कहि, जे घरबला जाबे नै खाएत ताबे हम केना खाएब? भलेँ बेमारी जे भऽ जाउ। नीक मौगकी पहचान खाली पाछू खेने-पीनेसँ होइ छै की? आकि नीक बेवहार आ विचारसँ होइ छइ। जइ बेवहार-विचारसँ नोकशान हुअए उ अरामसँ तियागल जा सकैए। जाउ अहाँ, आबो जल्दी खाउ।

रामदाइ- जाइ छी, रौतुका खेनाइ बनबैक बेर सेहो भेल जा रहल छइ।

(रामदाइक प्रस्थान।)

जीतन- बौआऽऽ..? बौआ?

शशि- *(अन्दरसँ)* हैयए एलौं। *(शशिक प्रवेश)*

जीतन- केतए गेल छेलही?

शशि- कबड्डी खेलैले। सभकेँ हरा देलिऐ आइ।
(पियारसँ)

जीतन- बाह! बाह! तूँ बड़ होशियार छेँ।

शशि- हँ यौ, होशियार छिऐ तहन ने इसकूलोमे सभकेँ हरा दइ छिऐ। हमहीं फस्ट भऽ जाइ छिऐ।

जीतन- इसकूल आइ गेल छेलहीन से?

शशि- हम तँ सभ दिन इसकूल जाइ छी। एक दिन नै जेबै तँ तीन छड़ी, दू दिन नै जेबै तँ छह छड़ी, तीन दिन नै जेबै तँ नअ छड़ी...। हेड सर बेचनजी मारै छथिन। जाबे गार्जन नै कहै छथिन हुनका ताबे नै छोड़ै छथिन।

जीतन- पढ़बैमे केहेन छथुन से ने कह? आकि खाली मारबे करै छथुन।

शशि- नै यौ पप्पा, पढ़ेबो बड़ नीक करै छथिन। हँसा कऽ, खेला कऽ मारि कऽ, पीटि कऽ, नचा कऽ, गबा कऽ पढ़बैत रहै छथिन। हुनक विद्यार्थी सभ किछुमे तेज होइ छइ।

जीतन- चोरियोमे तेज होइ छइ?

शशि- नै यौ पप्पा, से नै कहियौ। एक दिन हुनकर बेटा अपने घरमे पचासटा टाका चोरा लेलकै। से जे ओकरा सर मारलखिन मति पुछू। हुनका डरे कोइ कनियोँ एमहर-

ओमहर नै कऽ सकैए। हुनका डरे विद्यार्थी छुल-छुल मुतैत रहैए।

(रामदाइक प्रवेश)

रामदाइ- शशि, पढ़ैक बेर नै भेलैए की?

शशि- पप्पा संगे गप करै छेलिऐ तँ केना पढ़ितौं। आब जाइ छी पढ़ैले।

रामदाइ- जो, जल्दी सबक बना ले। खेनाइयो बनि गेल छइ। हे हबर-हबरमे सभटा गलतीए नै बना लिहेँ। नै तँ इसकूलमे मारि खइहेँ। कम्मे बनबिहेँ मुदा ठीकसँ। जे रहि जेतौ से काल्हि बनबिहेँ। जो पढ़ गऽ।

(शशिक प्रस्थान।)

शशि पप्पा, बाबूकेँ देखियौन। खा लेथिन। राति भेलइ।

जीतन- देखै छिऐन।

(अन्दर जा कऽ पुन: प्रवेश।)

अबै छथिन।

(सतनक प्रवेश। रामदाइ पानि-पीढ़ी देलकैन। सतन बैसला, रामदाइ खेनाइ आनि देलकैन आ ओ खाइ छैथ। जीतन कुर्सीपर आ रामदाइ पटियापर बैस गप करै छैथ।)

शशि मम्मी, अहाँक सभ बेवहार-विचार नीक लगैए। मुदा एगो बड्डु खराप लगैए।

रामदाइ- कोन खराप लगैए?

जीतन- की कहब! अहाँ खतम छी।

रामदाइ- कहियौ ने, की?

जीतन- अहाँ समैपर किए ने खाइ छिऐ?

रामदाइ- की करबै? परिवारमे एना भऽ जाइ छइ।

जीतन- से तँ हमहूँ बुझै छिऐ। मुदा परिवारमे कनी-मनी अबेर भऽ जेनाइ आ घरबला जाधैर नै खाएत ताधैर हम नै खाएब, अबेर जेते भऽ जाउ। दुनूमे अकास-पतालक अन्तर छइ। अहॉ सभकेँ मन बेसी खराब अहू दुआरे होइए। हम तँ डाक्टर नै छी जे बेसी बेमारीक नाम कहब। मुदा एगोक नाओं कहि दइ छी- गैस्टिक। ऐ बेमारीमे हएत किछु नै आ सभ करम भऽ जाएत। तँए कहै छी जे समैपर भोजन करू आ ऐ बेमारीसँ प्राय: मुक्त रहू।

(सतन खा कऽ उठि गेला। तुरन्त छिपली धोइ लेली। जीतन पेपर पढ़ै छैथ।)

रामदाइ- आब धियान रखबै आ करबो करबै। शशि, शशिऽऽऽ।

शशि- *(अन्दरसँ)* की?

रामदाइ- दादीकेँ बजेने आबही। खा लेथिन आ तूहूँ खा ले।

ललिता- की कहलौं, कनियॉ?

रामदाइ- खाइ दऽ कहलयैन।

रामदाइ- जाइ छी, हम दुनू दादी-पोता लऽ कऽ खा लेब। अहाँ बौआकेँ दियौ। बेरा-बेरी राति बेसी भऽ जाएत। फेर बौआकेँ सबेरे उठैयोक रहै छइ।

कनियॉ, हम दुनू दादी-पोता जाइ छी। चल पोता, चल।

(ललिता आ शशिक प्रस्थान। रामदाइ जीतनकेँ पानि-पीढ़ी देली। जीतन बैसला। फेर रामदाइ खेनाइ देली। उ खाइ छैथ।)

जीतन- शशि मम्मी, एगो गप बुझि लिअ। मातृदेवो भव:। पितृदेवो भव:। हमरा नजैरमे जे कियो माता-पिताक सेवा करै छैथ, हुनका राम-सीताक पूजाक बरबैर फल भेटै छैन। हँ, माता-पिताक संग राम-सीताक सेवा होइन तँ सोनामे सुगन्ध।

रामदाइ- अहाँ एते केना बुझलिऐ?

जीतन- सभटा सत्संगक प्रभाव छी। हम कखनो कुसंगतमे नै रहै छी। जाउ, अहूँ खाउ गे। हमरो खाएल भऽ गेल।

(खा कऽ हाथ धोलैथ। शशि सुतल अछि। सतन आ ललिता अपन-अपन बिछौनपर पड़ल छैथ। जीतन सतनक पएर दबा रहल छैथ।)

जीतन- बाबू, हमरा सभसँ जे किछु टुटी-फुटी होइ। ओकरा हमरा सभकेँ अबस्स कहब। सुधारैक जरूर परियास करबै।

सतन- कोनो टुटी-फुटी नहि। बड़ बढ़ियॉ-बड़ बेस।

(रामदाइ ललिताक पएर दबा रहल छैथ।)

रामदाइ- माए, हम अहॉकेँ अपन माए जकॉ बुझै छी आ करै छी।

ललिता- से, अहॉ कहबै तहन हम बुझबै। हम कोनो अनछेड़ छी।

रामदाइ- सएह कहलौं। जँ हमरासँ कोनो गलती भऽ जाए तँ बेटी जकाँ डॉटब।

ललिता- जौं डॉटब तँ तकलीफ हएत तहन?

रामदाइ- तकलीफ किए हेतइ? सुधार हेतइ। हम सुधरबै।

ललिता- बेस कहब। ओना अखैन धरि गलती नै भेल हेन।

◌

पटाक्षेप

दृश्य- चारि

(परदेशीक परिवार। परदेशी आ रूपवती आपसी गप-सप्प करै छैथ। रूपवती आधुनिकत: सजल-धजल अछि। चश्मा सेहो पहिरने अछि।)

परदेशी- एगो गप बुझलिऐ की?

रूपवती- की?

परदेशी- आइ माए-बाबूकेँ अपनामे आबैक समए छइ।

रूपवती- एक महिना बीति गेलै। इएह जाइ गेलै हन। केना कऽ आ कइ दऽ के एक महिना बीति गेलै से नै कहि। आबए दियौ। अबैक मन हेतै, तँ एत्तै। नै तँ, हम पुछबो नै करबै।

परदेशी- एना किए बजै छिऐ- 'पुछबो नै करबै'?

रूपवती- तँ की बाजी,अहीं कहूँ?

परदेशी- ई बाजू जे अपनामे एथिन तँ भैयासँ बेसी करबैन जे लोक नाओं लेत।

रूपवती- ई अहीं बाजू आ नाओं करू। हमरा नाओं नै करबाक अछि। हमर नाओं के नै जनैए। हम कोनो मामूली जनानी छी।

परदेशी- यै, घमण्ड नै करबाक चाही। बड़ गुणगर छी तँ गम्भीर भऽ कऽ चलू। घमण्डबला गप-सप्प नै बाजू। घमण्ड रावण, कंस आ दुर्योधनोकेँ नै छोड़लकै।

रूपवती- उचित बात बापोकेँ कहबै। रापण, कंस आ दुर्योधनक बात छोड़ि दियौ। उ सभ तँ अनुचित पर चलै छेलइ।

परदेशी- हमरा इसकूलक समए भऽ गेल। हम इसकूल जाइ छी। जदी माए-बाबू अपनामे चलि आएत तँ कोनो आन तरहक नै हेबा चाही, से धियान राखब।

रूपवती- बेस जाउ। *(परदेशीक प्रस्थान।)*

लगैए जेना श्रवणकुमारक बेटा होइ। हमरा जे मन हेतै से करबै। हमरा कोइ की कऽ सकै छइ? केकरोसँ हम कथीमे कम छी? हमरा लग ओत्ते माल अछि जे केकरो किछु कऽ सकै छी। *(झिलमिल सितारों का आंगन होगा तर्ज पर गीत गबैए।)*

जे-जे कहलिऐ, से से केलकै।
केहेन-केहेन पंच, हारि मानलकै।
जे-जे.....।
मास्टर घरबलाकेँ, तरेमे रखै छी।
मास्टर घरबलाकेँ होऽ ऽ ऽ
मास्टर घरवलाकेँ, तरेमे रखै छी।
ससुर भैंसुरकेँ, दबने रहै दी।
सौस नै डरे, कल्ला अलगौलकै।
केहेन-केहेन पंच, हारि मानलकै।

जे-जे..... ।

जे जे मन हेतै से, कके हम रहबै ।
जे जे मन हेतै से होऽ ऽ ऽ
जे जे मन हेतै से, कके हम रहबै ।
ऐश मौज जिनगी, खूम बीतेबै ।
दर दियाद सभ, भिन्न कऽ देलकै ।
केहेन-केहेन पंच, हारि मानलकै ।
जे जे.... ।
हमरा जेकाँ इज्जत, आरो केकरो छइ ।

हमरा जेकॉ इज्जत, होऽ ऽ ऽ
हमरा जेकॉ इज्जत, आरो केकर छइ ।
हमर बुधिक आगू,सभ मकड़ा छइ ।
आइ धरि कियो, मुहोँ नै देखलकै ।
केहेन-केहेन पंच, हारि मानलकै ।
जे जे... ।

ललिता *(अन्दरसँ)* कनियॉ कनियॉ, कनियॉऽऽ

रूवपती- लगैए आबै जाइ गेलै। ओह! कनी दिन आरो रहितै ओमहरे से नइ ।

ललिता- *(अन्दरसँ)* कनियॉ, कनियॉ, कनियॉऽ ऽ ऽ ।

रूपवती- *(मुँह चमका कऽ)* कीऽ ऽ ऽ ।

(सतन आ ललिताक प्रवेश। रूपवती नमहर घोघ तानि लेलक।)

ललिता- हम सभ आबि गेलौं अहाँमे।

रूपवती- समय पूरि गेल तँ हमरामे एलौं। अइले हम नाचू गे?

ललिता- एना किए बजै छी कनियाँ?

रूपवती- हिनका तँ कोनो गारि-फज्झैत नै देलिऐन हन। हिनका किए लागि गेलैन?

सतन- *(ललिताकेँ)* अहाँ चुप रहू। ओते कियो पियौजकेँ छिलैए? सुनै जाइ जाउ, पियौजकेँ छिलैत-छिलैत अन्तमे किछु नै भेटै जाएत। बेकारमे अहाँ सभ गोला-बादैर करै छी।

रूपवती- इहए कहथुन ने, हम हिनका कोनो खराप बात कहलयैन हेन?

सतन- ई बुझनुक छथिन, तँ खराप बात बजथिन। नै नै।

रूपवती- माताजी, कनी गोसाँइ घरसँ पटिया आनि कऽ बैसै जाइ जाउ। हम खेनाइ नेने अबै छी।

(ललिता आ रूपवतीक प्रस्थान। ललिता पटिया आनि बिछा कऽ दुनू परानी बैसलैथ।)

सतन- यै, भिनसरसँ भरि दिनका समैक पता चलै छइ।

ललिता- एकर मतलब की भेलइ?

सतन- एकर मतलब ई भेलै जे छोटकीक चालि-चलनसँ बुझा रहल अछि जे ई केहेन बेवस्था करती। लगैए एमहर बेज्जैत छोड़ि किछु नै भेटत। अपना सभकेँ परहेजसँ

रहए पड़त। ओकरासँ मुहाँ-ठुट्ठी नै करब। हारि मानी झगड़ा टूटए।

ललिता- जौं सहास नै कएल जाएत तहन?

सतन- तहन अँगनासँ निकैल टरि जाएब।

(खेनाइमे नून भात लऽ कऽ रूपवतीक प्रवेश। खेनाइ सिर्फ सतन ले अछि। सतन नून भात खा रहल छैथ।)

ललिता- *(मुस्कियाइत)* कनियाँ, आइ छुच्छे भात रहलिऐ हेन?

रूपवती- नै माताजी। दालि, तरकारी, अल्लूक तरूआ, बैगनक तरूआ आ पापड़-तिलौड़ी सेहो बनेने रहिऐ। मुदा उ सभ सधि गेल छेलइ।

ललिता- सधि गेलै तँ की हेतइ? परिवारमे एना होइत रहै छइ। मुदा कनी कालक पछाइते खइतैथ तँ दालि वा तरकारी बना दैतिऐन। बुढ़बाकेँ गाड़ा लगि जाइ छैन।

रूपवती- से तँ होइतै। मुदा सोचलिऐ जे भूख लगल हेतैन तँए...। की कहितैथ जे खाइयो ले ने दइए।

(सतनकेँ गाड़ा लागि गेलैन।)

सतन- कनियाँ पानि लाउ। गाड़ा लागि गेलए। आब छोड़ै जाइ जाउ दालि-तरकारीक गप-सप्प। जे छै वएह बहुत छइ। पानि कनी जल्दी लाउ।

रूपवती- माताजी, कनी आनि देथुन। बाबूजीकेँ गाड़ा लगल छैन। हमरा भूखे माथ दुखाइए।

(ललिता अन्दरसँ पानि अनली। सतन पानि पीब हाथ-मुँह धोइ उठि गेला।)

सतन- कनियाँ, अहूँ सभ खाइ जाउ। हम जाइ छी।

(सतनक प्रस्थान।)

रूपवती- माताजी, हिनको बड़ भूख लागल हेतैन। ईहो खाइए लौथ।

ललिता- अहाँ बैसू, हम जाइ छी लऽ कऽ खा लेब।

रूपवती- नै नै। ई केना जेथिन अपनेसँ लइले? लोक हमरा की कहत जे सौसकेँ खाइयो ले ने दइ छइ?

ललिता- अहाँकेँ माथ दुखाइए से?

रूपवती- कनी हल्लुक लगैए। अहीं बैसू, हम नेने अबै छी।

(रूपवती अन्दर जा कऽ नून-भात अनली।)

लौथ माताजी, खौथ।

(ललिता खा रहली अछि।)

ललिता- कनियाँ, कनी तेल अछि तँ दिअ।

रूपवती- कहाँ छैन माताजी तेल। इसकूलसँ अबै छथिन तँ कहबैन आनि दइले।

ललिता- कनी पानि नेने आउ।

(रूपवती अनठा देली।)

कनियाँ, कनी पानि नेने आउ। कनियाँ, कनी पानि नेने आउ।

कनियाँ, नै सुनै छिऐ?

रूपवती- आँइ, की कहलखिन?

ललिता- कहलौं, कनी पानि नेने ने आउ।

रूपवती- पानि लऽ कऽ ई खाइले नै बैसलखिन से?

ललिता- बिसैर गेलिऐ।

रूपवती- एना जे हमरासँ भेल रहितै तँ इहए केते बजितऽथिन?

ललिता- एत्ते कियो बात चेथराबए। पानि देब तँ दिअ नै तँ हम अपने उठि कऽ कऽ लऽ लइ छी।

(ललिता अन्दरसँ पानि आनि पीब कऽ हाथ-मुँह धोइ उठि गेली।)

रूपवती- नै माताजी, से केना हेतइ। लोक की कहत हमरा जे पुतौह सौससँ काज करबै छइ। ई नीक गप नै भेलइ।

ललिता- ओत्ते नीक-अधला देखबै तँ काज चलतै। अहॉ बैसू, हम नेने अबै छी। प्रेममे किछु भऽ सकैए।

रूपवती- अहॉ नै मानब तँ नेने आउ।

(ललिता अन्दरसँ पहिने पानि-पीढ़ी आनि कऽ देलखिन।)

ललिता- बैसू *(रूपवती बैसली। तुरन्त सौस नून-भात आनि कऽ देली।)*

रूपवती- हम नै खेबैन एतए। हमरा लाज होइए। हमरा लोक सभ देखत तँ की कहत जे कनियॉ केते निरलज्ज छइ। नै तँ एगो नै हेतइ, एत्तै खा लइ छी। कोइ किछु बाजत से केकरो राजमे बसल छी। अपना ऐठाम किछु करब। तइसँ लोककेँ कोन मतलब?

(रूपवती खा रहली अछि।)

माताजी, ठीके गाड़ा लगै छै नून-भातमे। माताजी, कनी अन्दर चलि जौथ आ ट्रंकक ऊपरमे एगो प्लास्टिकक डिब्बा राखल अछि, ओ कनी नेने आबौथ।

ललिता- कथी छै ओइमे?

रूपवती- रूपन ले किछु-किछु हेतइ।

ललिता- अच्छा नेने अबै छी।

(ललिता अन्दर जा कऽ उ डिब्बा आनि कऽ देली। रूपवती डिब्बा खोलि दालि, तरकारी, तरूआ पापड़ इत्यादि निकालली आ लऽ कऽ खाए लगली।

रूपवती- माताजी, खाइत तँ लाज होइए, मुदा की करबै। नै धँसैए। तैयो खा लइ छी। तरे-तर बोखार रहैए। हरदम माथ दुखाइत रहैए। अन्न नीक नै लगैए। चहटगर खाइक मन होइत रहैए।

ललिता- लगैए किछु भऽ तँ ने गेल हेन, कनियॉ?

रूपवती- नै, नै माए। से गप नै छइ। तइमे हम बड़ बुधिसँ काज लइ छी।

ई कनी बहरेथुन ने। हिनका सोझामे केना खेबैन?

ललिता- अच्छा, हम जाइ छी। अहॉ खाउ।

(ललिताक प्रस्थान। रूपवती ऐंठ-ऐंठ कऽ खा रहली अछि। रूपनक प्रवेश।)

रूपन- मम्मी, मम्मी, हमहूँ खेबौ।

रूपवती- हमरे संगे खो।

(दुनू मायपुत संगे खाइए।)

खाली तरूएटा खाइ छिहिन। भात नै खेबहीन?

रूपन- हमरा भात नै नीक लगैए।

रूपवती- *(खिसिया कऽ)* तँ तूहीं खो। हम नै खाएब।

(खेनाइ छोड़ि उठि अन्दर गेली। रूपन तरूआ खा कऽ उठि अन्दर गेल। रूपवतीक प्रवेश।)

मुड़ीमचरूआ, सरधुआकेँ ईहो नै भेलै जे मम्मियोकेँ तरूआ तरकारी खाए दिऐ। मम्मीक मन खराप रहै छइ। ओहिना पड़ले रहतै सभटा। अबै छै चकेठबा तँ देखा दइ छिऐ।

(परदेशीक प्रवेश।)

परदेशी- रूपन मम्मी, ई अँइठ-काँठ किए पड़ल अछि?

रूपवती- जे खेलकै से उठेतै। हम केकरो बहिया नै छिऐ। आब अहूँकेँ अपन अँइठ अपने उठबए पड़त।

परदेशी- एना किए बजै छी? किछु भेल हन की?

रूपवती- की हएत, कप्पार?

परदेशी- बाजू ने, की भेल?

रूपवती- जखैनसँ बुझ़बा-बुढ़िया हमरामे आएल तखैनसँ हमरा खाइयोपर आफत भऽ गेल। रूपना सेहो बड खौकारभऽ गेल। सभटा तरूआ खा गेल। हमरा तँ जे भेल से भेल। मुदा अहाँ की खाएब, से अहाँ जानु।

परदेशी- अइले एत्ते खिसियाइक कोन खगता छइ? अपना सभ घरक गार्जन छिऐ। ऐ सभ तरहक घट्टी-कुघट्टी घटोसए पड़बे करत। हम सभ केकरा कहबै आ जँ कहबै तँ लोक

हमरे सभकेँ बेकूफ कहत। ऐ सभ गपपर धियान नै दियौ। जाउ, आइ कनी जल्दीए खेनाइ बनाउ गे। आ हे, रूपनकेँ कहबै बाबाकेँ ताकि अनैले। केम्हरो गेल हेथिन।

(रूपवतीक प्रस्थान।)

पंचैतीमे फैसला भेल रहै जे बिना मँगने बुढ़ाकेँ एक हजार दइ जेतइ। से हम आइए दए दइ छिऐन। भैया दिससँ आएल छैथ। पाइ सधि गेल हेतैन।

(परदेशी सभटा अँइठ उठौलैन।

रूपवतीक प्रवेश।)

रूपवती- बुढ़बा-बुढ़िया ले बड़ चिन्ता अछि। हम किछु ले मँगै छी तँ अस्सी मन पानि पड़ि जाइए। एगो कहि दइ छी, बुढबाकेँ पान साएसँ बेसी नै देबइ। से जौं देबै तँ बुझि लिअ कोनो दशा बाँकी नइ राखब।

(रूपवतीक प्रस्थान।)

परदेशी- हम तँ धर्म संकटमे छी। किङ्कर्तव्यविमूढ़ छी। मुदा बुधि-विवेकसँ काज लिअ पड़त।

(सतनक प्रवेश। परदेशी पएर छुबि प्रणाम केलैन।)

सतन- की बौआ, की कहलह?

परदेशी- अपनेक दर्शन कऽ असिरवाद लेबाक छल। भोजन करै जाइ गेलिऐ की नइ?

सतन- हँ हँ भऽ गेलइ।

परदेशी- किछु टुटी-फुटी हेतै, तँ धियान नै देबइ।

सतन- हँ हँ, अपन घरमे केतौ धियान देल जाइ।

परदेशी- कहलौं, उ एक हजार टाका लऽ ने लिअ। दिक्कत होइत हएत।

सतन- लाबह। *(परदेशी एक हजार टाका गिन कऽ सतनकेँ देलैन।)*

ठीके छह।

परदेशी- *(कनफुसकी करैत)* रूपन मम्मी पूछत तँ कहबैन पाँचे साए टाका देलक।

सतन- फुइस किए कहबैन? आ जँ कहुना बुझि जेथुन तँ बड़ बेज्जैत करथुन। हमर विचार जे सॉच बात बाजि देबइ, जे हेबाक हेतै से हेतइ। एगो पचबैले हजारो फुइस बाजए पड़त। तैयो फुइस फुइसे रहत।

परदेशी- अपनेक जे विचार हुअए, सएह करब।

(परदेशीक प्रस्थान आ रूपनक प्रवेश।)

रूपन- बाबा, मम्मी कहलक खा लइले। अखैन नै बहराइयौ केतौ।

सतन- बेस,जा। मम्मीकेँ कहिहक बाबा दूरेपर छथिन।

(नून-रोटी खेनाइ लऽ रूपवतीक प्रवेश। बिना पानि-पीढ़ीक सतन खाइले बैसै छैथ।)

कनियाँ, कनी पानि-पीढ़िया नेने आउ।

रूपवती- नेने अबै छिऐन। कहलयैन, रूपन पप्पा पाइ देलकैन की नइ?

सतन- हँ, देलक।

रूपवती- केत्ते देलकैन?

सतन- एक हजार देलक। एतबेक गप रहइ।

(रूपवती खिसिया कऽ अन्दर जाइ छैथ आ परदेशीकेँ बजा अनै छैथ।)

रूपवती- कहने छेलौं, पाँचे साए ताबे दइले तँ एक हजार किए देलिऐन?

परदेशी- जे गप रहै आ कागत बनल रहै, से देलिऐन। से जँ नै दैतिऐन तँ हम दोखी होइतौं।

रूपवती- अपना देशमे स्वतन्त्रता आ समताक अधिकार सभकेँ भेटल छइ। मुदा, अस्सलमे होइ की छइ? सभटा कानून कोठीक कन्हापर रखा जाइ छइ।

परदेशी- वएह राखल कानून बेर पड़लापर लोकक रक्षा करै छइ। अपना भरि कानूनक रक्षा करी। जानि कऽ गलती नै करी।

रूपवती- *(घोघ तरसँ सतनकेँ)* पाँच साए टाका ताबे हमरा दौथ। काज अछि।

सतन- हाथ अँइठ अछि। हैइए उठै छी तँ दइ छी।

परदेशी- नै बाबू, अहाँ नै दियौ। एकरा जे जरूरी हेतै से हम पूरेबै।

रूपवती- तहन हमरो एक हजार टाका लाउ तँ। अखैन लाउ अखैन।

परदेशी- अखैन तँ हाथपर नै अछि। मुदा कालि कोनो जोगार कऽ पक्का दऽ देब।

रूपवती- हम अक्खैन लऽ कऽ रहब नै तँ बुझि लअ।

सतन- बौआ, अइले तूँ सभ झगड़ा नै करै जाइ जाह। ई सभटा लऽ लएह। कनिएँकें दऽ दहक। हमरे काल्हि-परसू दिहह।

परेदशी- अहॉ रखू बाबू। हम आइए एकरा कोनो जोगार कऽके दइ छिऐ।

रूपवती- अक्खैन लाउ। लाउ अक्खैन।

सतन- कनियॉ, अहॉ सभ झगड़ा नै करू। कनी पानि नेने आउ। गाड़ा लगैए। खा कऽ उठै छी तँ हमहीं दऽ दइ छी।

रूपवती- जाउ अपन आनि लिअ। सभटा बीख तँ अहें छी। जहियासँ अबै जाइ गेल हन, तहियासँ घर अशान्त भऽ गेल हेन। केते नीक जकॉ रहै जाइ छेलौं।

सतन- कनियॉ, पाइनो आनि ने दिअ जे हाथो धोइ उठि जाएब आ पाय दऽ जेतए मन हएत तेतए चलि जाएब। हमरा द्वारे अहॉ सभकें किए दिक्कत हएत? किए झगड़ा-दन हएत?

परदेशी- बाबू, अहॉ औगताउ नहि। ई पानि नै आनि देलक। हम आनि दइ छी। हम अहॉक बेटा छी किने।

(परदेशीक प्रस्थान।)

रूपवती- ई बुढ़ौरा हमरा ऐठाम आबि आगि लगा देलक।

(तमसा कऽ सतनक थारी लऽ कऽ रूपवती फेंक तमसा कऽ सतन कानए लगै छैथ। गमछासँ हाथ-मुँह पोछि फाँड़मे सँ एक हजार टाका निकालि फेक दइ छथिन।)

सतन- हे! दाता-दिनकर! एहेन पुतौह सात घर दुश्मनोकेँ नै दिहक। हे लऽ लिअ ई पाय।

(रूपवती पाय लऽ प्रस्थान। पानि लऽ कऽ परदेशीक प्रवेश।)

परदेशी- बाबू किए कनै छी? की भेल? किए उठि गेलिऐ? थारी किए फेक देलिऐ?

सतन- हम किए फेंकबौ। आगूसँ घींच कऽ फेंक देलकौ। हाथ-मुँह गमछासँ पोछि फाँड़मे सँ एक हजार टाका निकालि कऽ आगूमे फेंक देलिऐ। उ लऽ कऽ चलि गेलौ।

परदेशी- बाबू, ई बड़ पैघ गलती केलक उ। ओइले हम क्षमा मँगै छी।

(पएर पकैड़ लइ छैथ। ललिताक प्रवेश।)

ललिता- की भेलै बौआ? की भेलै जीतन बाउ?

सतन- किछु नै भेलइ। ओहिना पएर पकड़ने छइ?

ललिता- जे कहियो नै से लोहियेमे ।अहॉ फुइस बजै छी। कोनो बात तँ अबस्स छइ। बौआ,बाज ने की भेलै हन?

परदेशी- बाबूकेँ एक हजार टाका देलिऐन। तइले छुलाछैन आगूक थारी घींचि कऽ फेंक देलकैन। इएह बात छइ। ओही ले हम बाबूसँ क्षमा मँगै छिऐन।

ललिता- बात तँ मामूली नै छइ। फेर पंचैती बैसबैबला छै वा कोर्ट जाइबला छइ। मुदा ई औंगरी काटब अपने घा आ उ औंगरी काटब अपने घा। माया जालमे औझरा जाइ छी। खाएर.., बाबू बुझथुन, क्षमा करथुन वा नहि।

सतन- बेटा छँए, तोहर मुँह-ठोर देख हम गम खा आइ क्षमा कऽ दइ छियौ। मुदा क्षमाक मतलब सिरपर चढ़नाइ नै बुझहीन। जो कनियोकेँ समझा-बुझा दिहैन।

(परदेशीक प्रस्थान।)

ललिता- यौ जीतन बाउ, हमर विचार अछि जे खेत-पथार लऽ कऽ जीतने दिस चलितौं। फेर अपन सभकेँ मुइला पछाइत दुनू भाँइ अपन-अपन हिस्सा बाँटि लेत।

सतन- अहाँ बेसी आगू भागि गेलौं। बेसी औगता गेलौं। औगतेलासँ काज खराप होइ छइ। देखियौ ने कोन गरे ऊँट बैसै छइ। अहाँ असथीर रहू।

ललिता- केना असथीर रहूँ? किए नै औगताइ? हमरा घरबलाकेँ आगूसँ खाइक फेंक थारी देलक। ई कम भारी बात भेलइ। हमरा मारै जाइ जाएत तखैन बुझबै मारलक। अइसँ नीक जहर खुआ मारि दइताए।

सतन- कहब ठीक अछि। मुदा की करबै? ओतेटा हाथियो कहियो चुकि जाइ छइ। असथीरसँ कोनो समस्याक समाधान निकालैमे मजगुती रहै छइ।

ललिता- यौ, एकर चालिए बड़ उकड़ू देखै छिऐ।केते बेर भेलइ। केते बेर भेलइ। मुदा एक्को बेर पुछैले नै आएल जे माए, खाएब की नै खाएब। भुखै छटपटा रहल छी। अहाँक दुर्दशा देखि माँगैक हिम्मत नै होइए।

सतन- की करबै? प्रेमेसँ माँगियौ। नै देत तँ अपने लऽ कऽ खा लिअ।

ललिता- आब सेहो डर होइए। खाएर.., जाइ छी मँगबै।नै देतै तँ अपने लऽ कऽ खा लेब।

(ललिताक प्रस्थान।रूपनक प्रवेश।)

सतन- बौआ, केतए गेल छेलहक?

रूपन- इसकूल गेल छेलिऐ बाबा।

सतन- किच्छो नै।

सतन- किए? इसकूलमे पढ़ाइ नै होइ छै से?

रूपन- किच्छो पढ़ाइ नै होइ छइ। हाजरीक पछाइत मैडम सभ खाली गप छाँटैत रहै छै आ सर सभ खेनाइमे ओझराएल रहै छइ।

सतन- आ तूँ की करैत रहै छह?

रूपन- हम सभ नहरपर, नै तँ गाछीमे गोली-गोली खेलैत रहै छी। पाय-पाय खेलैत रहै छी।

सतन- आ सर सभ किछु नै कहै छथुन?

रूपन- एगो मनोज सर छथिन, जे कखनो-कखनो खिहारैले अबै छथिन। मुदा हम सभ हुनका पकड़ैए ने दइ छिऐन। बड़ी दूर बाध दिस भागि जाइ छिऐ। फेर खाइ बेरमे चलि अबै छिऐ। तखैन सर नै मारै छथिन।

(अन्दरमे मारि-देलक, मारि देलक केर हल्ला भेल। पहिने रूपन दौगल। पछाइत सतन सेहो दौगलैथ। पर्दा हटल। रूपवती ललिताकेँ झोंटा पकैड़ मारैए। परदेशी छोड़ा देलक। फेर खोंरना आनि मारैए। फेर परदेशी आ रूपन छोड़ा देलक।)

सतन- *(खिसिया कऽ)* एना किए करै छी? बाति गेलौं हेन की?

रूपवती- हँ, हम बाति गेलौं। ई बुढ़िया हमरा बताहि बना देलक।

(फेर रूपवती खापैड़ आनि खपड़बै लगैए। परदेशी हाथ पकैड़। आ रूपन साड़ी पकैड़ घीचैए। मुदा ओ ताउ नै मानि खापैड़सँ मारैत रहै छथिन। ललिता 'माए गै, बाप रौ' कहैत ओंघराइत रहै छथिन। तथापि रूपवती मारनाइ नै छोड़ै छथिन।)

सतन- ऐ जनानीकेँ एक्को रत्ती कोनो गत्तरमे लाज होइ छै जे घरबला बेटा आ ससुरक समक्ष हम कोन किरदानी करै छी! निरलज्जी कहीं क, हरमजादी कहीं के।

(रूपवती मारनाइ छोड़ि हकैम रहल अछि। कातमे ललिता बेहोश पड़ल अछि।)

रूपवती- हरमजादा कहीं के।

सतन- मुँह सम्हारि कऽ बाजू। नै तँ बुझि लिअ।

रूपवती- रौ बुढ़ौरा, तूँहूँ जवानमे ताला लगा ले। नइ तँ बुझि ले।

परदेशी- चूप रहू ने, मुँह बन्न करू ने।

रूपवती- पहिने ई बुढ़ौरा चूप रहौ। पतितबाकेँ कोनो गत्तरमे लाज नै होइ छै जे हम पुतौहसँ केना मुँह लगबै छिऐ, जेकर कहियो मुहोँ नै देखने हएत।

परदेशी- बाबू, अहीं बहरा जाउ। हारि मानी झगड़ा टूटए।

रूपन- हौ पप्पा, ओइ दिन एकरामे खाइ काल तरूआ खा लेलिऐ से खिसिया कऽ तरूआ फेंक देलकै हौ। छौड़ी बड़ खच्चर छह हौ। *(खिसिया कऽ रूपवती बाढ़ैन आनि*

रूपनकेँ मारए दौगल। रूपन पकड़ए नइ दऽ रहल अछि।)

सतन- *(आँखि लाल-पीयर करैत)* ऐ जनानीकेँ बापसँ भेँट हेबाक चाही। हरमजादी कहीं के- 2

(रूपवती सतनकेँ बाढ़ैनसँ झाँटए लागल। दू-तीन बेर झाँटलाक पछाइत परदेशी जबरदस्ती बाढ़ैन छीनि फेंक देलक। परदेशी भरि पाँज केँ पकड़ने अछि आ रूपन ओही बाढ़ैनसँ झाँटि रहल अछि। माए गै-बाप रौ चीचिया रहल अछि।)

रूपवती- हरामी बच्चा छोड़। जाइ देखा दइ छियौ। आइ हम सभकेँ बापसँ भेँट करा दइ छियौ।

परदेशी- हरामी बच्ची, कोनो बाप काज नै देतौ। बड़ चढ़ि-बढ़ि गेल छेँ।

रूपवती- माए गै, बाप रौ। कनी छोड़ ने, तँ देखा दइ छियौ।

(रूपवती परदेशीक बाँहिमे दाँती काटि लेलक। परदेशी छोड़ि देलक आ रूपवती भागि गेल। दुनू बापुत हकमऽ लगैए। अन्दर जा कऽ रूपवती देहपर मटिया तेल ढारि हाथमे सलाइ लऽ कऽ बाहर आएल। आगि लगबैक मुद्रामे अछि।)

हरामी बच्चा सभ, हरमजादा सभ। आब रहै जाइ जइहेँ। खूब फैलसँ खइहेँ, पीहेँ आ मौज करिहेँ। हइए आगि लगेलियौ। *(रूपवती सलाइ बारऽ लगैए।)*

परदेशी- *(दुनू हाथ पकैड़)* एना नै करू। लोक की कहत?

रूपवती- नै, आइ हम दुनियासँ चलि जेबे करब।

(फेर सलाइ बारैए)

परदेशी- हे गोड़ लगै छी। एना नै करू। लोक रस्ता नै चलए देत।

रूपवती- हमरासँ अहाँकेँ कोन मतलब अछि? जेकरासँ मतलब अछि तेकरा लग जाउ आ तेकरा लऽ कऽ रहू।

(फेर सलाइ बारैए)

हम हइए चललौं।

परदेशी- *(पएर पकैड़)* मिला-जुला कऽ रहै जाउ। हम किछु नै कहब। गोड़ लगै छी, एना नै करू।

रूपन- पप्पा, मरए दियौ जरए दियौ, एहेन मौगीकेँ अहाँ अपन दोसर बियाह कऽ लेब।

रूपवती- मुड़ीमचरूआ, सरधुआ ठीके कहैए। अहाँ दोसर बियाह कऽ लेब। हमरा जाए दिअ।

(फेर सलाइ बारैए।)

परदेशी- हे गोड़ लगै छी। प्रतिष्ठा बचाउ। इसकूलमे सभ खिधौंस करत।

रूपवती- प्रतिष्ठाबला गप कहै छी तँ हम जे कहब से करबै अहाँ? करबै तँ ऐ बेर छोड़ि दइ छी।

परदेशी- हँ करबै। मुदा अहूँ कनी लत होइयौ। आखिर अहूँतँ ओही बुढ़बा-बुढ़ियाक जनमल पर आएल छिऐ ने? ओकरा सभ सँगे नीक बेवहार-विचार रखियौ तँ हम किए किछु कहब?

रूपवती- हमरा ई प्रवचन नीक नै लगैए। ई अपने लग राखू। हमरा जे मन हएत से करब। ई शर्त मंजूर अछि तँ बाजू। नै तँ चललौं

(सलाइ बारि आगि लगबए चाहैए।)

परदेशी- जँ अहाँ अपन हेहरपनीपर सप्पत खेने छी तँ शर्त हमरा मँजूर अछि।

रूपवती- तहन आइ छोड़ि दइ छी।

(सलाइ फेंक देलक।)

रूपन- पप्पा, आइ हमरा सभकेँ एहेन बौह रहितै तँ देखा दैतिऐ।

◌

पटाक्षेप

दृश्य- पाँच

(स्थान- पंचाइत भवन। ओतए सतन, जीतन, परदेशी, शशि आ रूपन उपस्थित छैथ। सभ कियो सरपंच साहैबक प्रतीक्षामे छैथ।)

सतन- जीतन, कनी सरपंच साहैबकेँ देखहक ने, अबै छथिन की नै?

(जीतन अन्दर जा कऽ आपस आएल।)

जीतन- हँ बाबू, अबै छथिन सरपंच साहैब आ ओकील साहैब।

(विष्णुदेव आ रामप्रसादक प्रवेश। सभ कियो ठाढ़ भऽ जाइ छैथ। आपसमे प्रणाम-पाती भेल। सभ कियो बैसै जाइ गेला। विष्णुदेव आ रामप्रसाद कुर्सीपर बैसला आर सभ गोरे दरीपर।)

विष्णुदेव- की सतन बाबू? आब की दिक्कत अछि?

सतन- वएह परदेशीक कनियॉबला गप अछि।

विष्णुदेव- उ जनानी बड़ मुँहफट अछि। भने अहॉ सभ पंचाइत भवनपर बैसार केलौं। घरपर उ जनानी बड़ अरंगा लगैबताए। बाजू की गप अछि?

सतन- सरपंच साहैब, एक्के महिनामे हम दुनू परानी परदेशीमे अक्कछ भऽ गेलौं। एकर कनियॉ हमरा आगूसँ खाएक छीनि लेलक आ लाठी आ खापैड़सँ अधमौगैत कऽ

मारलक। खाइले जे देलक से मति पुछू। नून-भात, नून-रोटी। एक हजार टाका ले परदेशियाकेँ जे दुर्दशा केलक से वएह बुझैत हेतइ। हमरा दुनू परानीकेँ केना आ केतए राखै जाइ जाएब आकि भगा देब। तही ले फेर अपनेकेँ बजौलौं आ बैसार केलौं।

विष्णुदेव- की परदेशी, ई सभ ठीके बात छिऐ?

परदेशी- जी सभटा ठीके छिऐ।

सतन- उ तँ देहपर मटिया तेल ढारि आगि लगबैले तैयार छेली। संजोग छेलै जे परदेशिया गामेपर छल। कहुना बेचारा ओकर पएर-दाढ़ी पकैड़ आगि लगबैसँ बँचेलक।

विष्णुदेव- की परदेशी, बात ठीके छिऐ?

परदेशी- जी, ठीके छिऐ।

विष्णुदेव- तहन जनानी बड्डु खतरनाक अछि। करवनो किछु कऽ सकैए आ सभकेँ जेहल खटा सकैए।

(रूपवतीक प्रवेश। सभ आश्चर्यमे पड़ि जाइ छैथ। सभ एकटकसँ रूपवती दिस तकैत रहि जाइ छैथ।)

रूपवती- जनानी खतरनाक तँ छैहे। सभकेँ ई जेहल खटाएत आ अहूँकेँ नै छोड़ब। नै तँ अपना फैसलापर चेत जाउ।

रामप्रसाद- अहाँ जनानी छी। अहाँक एतए काज नै छइ। एतए मरदा-मरदी गप होइ छइ।

रूपवती- आ जँ मरद जनानी हुअए आ जनानी मरद हुअए तहन?

रामप्रसाद- मरद जनानी आ जनानी मरद करवनो नै भऽ सकैए।

रूपवती- भऽ सकैए, भऽ सकैए। अहॉ सरपंच साहैबसँ पूछि लियौन।

विष्णुदेव- भऽ सकै छै। किए नै हेतै? बेवहार-विचारसँ भऽ सकैए। अहॉ जखैन एते बुझनुक छी तँ परिवारकेँ समैट-बटोरि कऽ किए ने चलै छी?

रूपवती- एकदम चलै छी आ चलिते रहब। मुदा अनरगल हम बरदास नै करब। अइले हम बापोकेँ नै छोड़बै।

विष्णुदेव- कनियॉ, अपने बड़ बुधियारि छी। घर चलि जाउ। हमर आग्रह अछि।

रूपवती- हम घर चलि जाउ जे अहॉ गलत फैसला दऽ दिऐ। अहॉ बड़ काबिल आ हम बड़ बुरबक। हम घर नै जाएब। फैसला सुनब।भतपेलबा मास्टरसँ बात नै सीक्षै-पकैबला अछि।

(परदेशी रूपवतीकेँ देख मुड़ी गोंति लेलक।)

विष्णुदेव- सतन बाबू, अहॉ हमरा बजा कऽ बेज्जैत करबा रहल छी।

सतन- सरपंच साहैब, एहेन लगती हम नै कऽ सकै छी। हम मजबूर छी। हमर समस्याक समाधान अहीं कऽ सकै छी। हमरा परम बिसवास अछि।

विष्णुदेव- एना जे अशिष्टताक परिचय देमए आबि गेली हेन। ई हमरा बड़ अप्रिय लागि रहलए। परदेशी, अहाँ अपन पत्नीकेँ समझा-बुझा दियौन। नै तँ हमरा अपन शक्तिक प्रयोग करए पड़त।

परदेशी- सरपंच साहैब, हम किछु नै कहि सकै छिऐ। कारण हम वचनबद्ध छी। ओना, अपनेक आदेश छै तँ परियास करै छी। असफलता निश्चित अछि।

यै रूपन मम्मी, गोड़ लगै छी, घर चलि जाउ। सबहक सँगे एक्के रंग अशिष्ट बेवहार नीक नै लगैए। सभ बेकूफ बुझै छैथ।

रूपवती- जे अपने बेकूफ रहै छै, उ आनकेँ बेकूफ बुझिते छइ। ई कोनो भारी बात नै छइ।

रामप्रसाद- सर, ऐ रामा-खटोलामे नै पड़ू। अहाँ अपन काज करू।

विष्णुदेव- ठीके कहै छी, ओकील साहैब। बुढ़िया-फुइसमे पड़ि समए बेरबाद केनाइ खराप अछि। सतन बाबू, अपने की चाहै छी आ केना शान्ति भेटत?

सतन- सरपंच साहैब, हमरा जीतनमे शान्ति भेट सकैए। हमरा जीतनमे असथाइ कऽ दिअ।

विष्णुदेव- की जीतन, बाबू अहींमे असथाइ रूपसँ रहए चौहै छैथ। अइमे अहाँकेँ कोनो असोकर्ज?

जीतन- सभ बेटा जँ एक्के रंग निमकहराम भऽ जेतै तँ माए-बापकेँ की दशा हेतइ? ओकरा बाग-बगैचा लगा कऽ की भेलइ? जखैन माए-बापकेँ पैरुख छेलै तखैन बेटा-बेटी ले खून-पसेना एक कऽके धन-सम्पैत बटोरलकै। ओइमे बेटा अपन-अपन हिस्सा छातीपर चढ़ि कऽ लेलकै। मुदा जखैन माए-बापक पैरुख घटलै आ उ सभ निष्क्रिय भऽ गेलै तखैन ओकर सबहक कोन बेवस्था हेतइ?

विष्णुदेव- जीतन, अहॉ कहए की चाहै छिऐ?

जीतन- हम इएह कहए चाहै छी जे माए-बाबूकेँ जीवन भरि हम रखबै आ पूरा परियास करबै जे हमरामे सुख-शान्ति भेटैन।

विष्णुदेव- परदेशी, माए-बाप जीतनमे रहता, तइमे अहॉकेँ कोनो असोकर्ज?

परदेशी- जइसँ माए-बाबू खुश रहथिन, तइमे हमरा कोनो असोकर्ज नहि।

विष्णुदेव- सरपंचक फैसला समाजिक फैसला होइ छै जे कोर्टक फैसलासँ कनी अलग होइ छइ। हम अपन इएह फैसला दइ छी जे कुल खेत-पथारकेँ तीन ठाम ब-हिस्सा बरबैर लगा कऽ बुढा-बुढ़ी जीतनमे दू हिस्सा लऽ कऽ रहथिन आ एक हिस्सा परदेशीकेँ भेटतैन। सझिया कुटुम जीतन रहथिन। माता-पिता वा सझिया कुटुममे एक मुश्त एक हजार टाकासँ बेसी खर्चमे दुनूकेँ बरबैर-बरबैर लगतैन। विशेष परिस्थितिमे वा बेटा सभकेँ नै देलापर बुढ़ा-बुढ़ी अपन हिस्सा खेत बेच सकै छैथ। हिनका सबहक मृत्युक पछाइत बॉचल खेतकेँ ब-हिस्सा बरबैर कऽ दुनू भाँइ बॉटि लेता। हमर इएह फैसला भेल।

रूपवती- हम ऐ फैसलाकेँ नै मानब। कारण ई फैसला मुँह देख मुँगबा भेल। हम आधा-आधा हिस्सा लेब। बुढ़ा-बुढ़ीसँ हमरा कोनो मतलब नै अछि।

विष्णुदेव- अहॉ हिस्सा आधा-आधा लेब आ बुढा-बुढ़ीसँ कोनो मतलब नै। सएह ने?

रूपवती- हँ, सएह।

विष्णुदेव- अहॉ जबरदस्ती करबै? हम पुलिसकेँ बजाबिऐ अखैन?

रूपवती- अहॉकेँ जेकरा बजेबाक हुअए बजाउ। देखै छी केते पामर अछि। अहॉ सभ उनटे नै फँसि गेलौं तँ हमरा नामे कुकुर पोसि लेब।

(विष्णुदेव थाना फोन कऽ तीनिटा जनानी पुलिस रमा, उमा आ जयाकेँ मँगेलैथ। तीनू पुलिस प्रवेश कऽ बैसलैथ।

रमा- सरपंच साहैब, का समस्या बा?

विष्णुदेव- ई जनानी फैसला नै मानि रहल अछि। आर सभकेँ बल्कि एकर पतियोकेँ फैसला मान्य छैन। मुदा ई जबरदस्ती करै अछि। हमरा चुनौती देलक हेन जे सभकेँ फँसा देब।

उमा- सुनऽ, जनानीकेँ अक्षण बा। तनी बँचा क चलऽ।

विष्णुदेव- दियादी-बँटबारामे आरक्षण लागू नै ने भऽ सकै छइ।

(ऐ बीचमे पंचाइत भवनक खिड़कीसँ डोरी बान्हि कऽ फँसरी लगबैक परियास करैत जया देख लेली। उ दौग कऽ पकैड़ रूपवतीकेँ फँसरीसँ बँचा बैसारमे आनली।

जाया- ईहे जनानी बा। ई बड़ी हरामी जनानी बा।

रूपवती- हम किछु करै छेलौं, तइसँ केकरो कोन मतलब? जे हमरा देहमे भीरलै ओकरा सातू पुरखाक सारापर जा कऽ जे नै करबाक चाही से करबै।

सभटा खेल-बेल ऐ मुझौंसा सरपंचाक छी। एकरा डेकचीमे थारीमे, लोहियामे जे नै करबाक चाही से करबै। ऐ मौगिया सभकेँ माए-बहिन नै छै जे ओकरा देहमे भीड़तए। ई सैंडाही, भैडाही, पुतखौकी सभ हमरा देहमे किए भीड़ल? एकरा सभकेँ हम की बिगारलिऐ?

विष्णुदेव- तीनू मैडम, ई जनानी अपना सभकेँ बेज्जैत-बेज्जैत कऽ देलक। आब कोनो करम बॉकी नै अछि। एकरा आब स्वागत कएल जाए, पीटल जाए।

(रमा, उमा आ जया रूपवतीकेँ बेंतसँ पीटए लगली। 'माए गै- बाप रौ' करैत चचिया रहल अछि। मुदा बेंतक बरर्खा नै रूकि रहल अछि। रूपवती खसि कऽ ओंघरा रहल अछि- 'गै साँएकेँ खेबौ गै- पुतकेँ खेबौ गै' कहैत चिचिया रहल अछि। पीटनाइ बन्न नै भेल हेन। गइ कौरमे ई करबौ गै- ऊ करबौ गइ, कहि ओंघरा रहल अछि। जे सरधुआ सभ जे टुनकीबा सभ हमरा मारि खियाबैए ओकरा बापकेँ-माएकेँ-दादाकेँ-दादीकेँ-नानाकेँ-नानीकेँ कौरमे ई करबौ उ करबौ। तैया बेंतक बरर्खा नै रूकल। रूपवती बेहोश भऽ गेली। पुलिस सभ मारनाइ छोड़ि देली। तीनू पुलिस हकैम रहल अछि।)

विष्णुदेव- आब बापसँ भेँट भेलइ। एहेन हरामी जनानी तँ केतौ नै देखने रही। खाली मुँह झँपने सँ नीक होइ छै आकि बेवहारो-विचार चाही।

(रूपवती होश कऽ उठि बैसली।)

रूपवती- मुड़ीमचरूआ-सरधुआ सभ केकरो नीक नै हेतौ। सबहक पुत मरतौ। सैंडाही-भैडाही सभ तोरो नीक नै हेतौ। सबहक पुत मरतौ।

विष्णुदेव- अहॉ सभ फेर एकरा स्वागत करू तँ...। मन नै भरलै हन। *(तीनू पुलिस फेर पीटए लगैए। माए गै-बाप रौ कहि चिचिया रहलए। फेर बेंत खाइत-खाइत ओंघरा गेली। कनी-कालक पछाइत बेहोश भऽ गेली।)*

आब अहाँ सभ छोड़ि दियौ। फेर देखल जेतइ। जेहेन खगता हेतै तेहेन काज हेतइ।

(तीनू पुलिस पीटनाइ छोड़ि देली। रूपवती होश कऽ मुँह उघारि उठि बैस दुनू हाथ जोड़ि लेलक।)

रूपवती- सरपंच साहैब, अहॉ हमर बाप छी। आब क्षमा कऽ दिअ। आब गलती नै करब। आब अहाँ जे जे कहब से से करबै।

विष्णुदेव- थूक राखू आ चाटू। तहन माफ करब।

(रूपवती थूक राखि चाटलक। थोपरीक बौछार भेल।)

जाउ, आइ माफ कऽ दइ छी। मुदा एगो बात बाजू। पंचैती मान्य अछि की नहि?

रूपवती- जी, मान्य अछि।

विष्णुदेव- पहिलुका आकि पैछला?

रूपवती- अपने जे कहबै से।

विष्णुदेव- पहिलुका मानए पड़त।

रूपवती- जी, ठीक छै, पहिलुके मानै छी।

विष्णुदेव- पहिलुका पंचैतीकेँ अक्षरश: पालन करए पड़त?

रूपवती- जी पूरा पालन करबै।

विष्णुदेव- आब कोनो तरहक गलती हएत तहन?

रूपवती- अपने जे सजा देबै, हम भोगैले तैयार छी।

विष्णुदेव- ओकील साहैब, कागत बना दियौन।

(रामप्रसाद कागत लिखि सभसँ दसखत करौलैन। तीन कोपीमे सँ एक कोपी अपने लग रखलैथ, एक कोपी जीतनकेँ देलखिन आ एक कोपी परदेशीकेँ सेहो देलैथ।)

कनियॉ हम सभ जा रहल छी। हमरा परोछमे अपन गलती ले श्रोता-समाजसँ घट्टी मानि लेबै आ ई सदिखन धियान राखब जे माता-पिता पहिल देवी-देवता होइ छथिन तथा माता-पिता आ सौस-ससुरमे कोनो अन्तर नै छइ।

रूपवती- जी, धियान रखबै।

(विष्णुदेव, रामप्रसाद, रमा, उमा आ जयाक प्रस्थान। रूपवती हाथ जोड़ि एकटँगा दऽ ठाढ़ भऽ गेली।)

समस्त श्रोता-समाज, हम अपन बड़ पैघ गलती ले क्षमा मँगै छी आ फेर ऐ तरहक गलती नै करैक सॉए आ बेटा

लगा कऽ सप्पत खाइ छी जे सपरिवार मिलि-जुलि कऽ रहब।

(थोपरीक बौछार भेल।)

◌

पटाक्षेप

इतिशुभम

रसुन पियौज

पात्र-परिचय

(1.) रमन : पहिल ताश खेलाड़ी
(2.) सुमन : दोसर ताश खेलाड़ी
(3.) अमन : तेसर ताश खेलाड़ी
(4.) पवन : चारिम ताश खेलाड़ी
(5.) फेकू : ताश खेलक दर्शक
(6.) कैलू : ताश खेलक दर्शक
(7.) गन्नू : ताश खेलक दर्शक
(8.) चुल्हाइ : ताश खेलक दर्शक
(9.) मंगला : फेकूक पड़ोसी
(10.) सोनू : फेकूक गौंआँ
(11.) मोनू : फेकूक गौंआँ
(12.) बिहारी : फेकूक बड़का बेटा
(13.) रामदेव : सरपंच
(14.) प्रेम : सरपंचक ओकील
(15.) बचनू : फेकूक छोटका बेटा
(16.) लक्ष्मण : समाजक प्रतिष्ठित बेकती
(17.) दुखन : फेकूक पड़ोसी
(18.) शत्रुघ्न : फेकूक पड़ोसी मपरी-
बौकुम छोटकी बेटी

दृश्य- एक

(रमन, सुमन, अमन आ पवन ताश-ताश खेल रहल अछि। दर्शकमे फेकू, कैलू, गन्नू आ चुल्हाइ छैथ)

फेकू- कैलू भाय, एगो गप बुझलहक हन की?

कैलू- नै भाय, किछु नै बुझलिऐ। की भेलै से?

फेकू- रसुन-पियौज बड़ महग भऽ गेलै हेन।

कैलू- केना हौ?

फेकू- रसुन बीस टके किलो छेलै, से अस्सी भऽ गेलै आ पियौज दस टके किलो छेलै, से साइठ भऽ गेलइ। बाप रे बा! मँहगाइ अकास छूने जा रहल छइ। एनामे गरीब केना जीतइ?

कैलू- केना नै जीतै आ किए नै जीतै? रसुन-पियौज तँ ऑक्सीजन नै छिऐ जइ बिना लोककेँ साँस बन्न भऽ जेतइ। लोक परहेजमे रहत। कम्मे कीनत वा साफे नै कीनत।

फेकू- हँ, से तँ ठीके। सए दवाइक एक संजम होइ छइ। मुदा किछु लोक एहेन छै जेकरा ओइ बिना बनबे नै करतै। समान महग ने भऽ जाउ।

कैलू- तोहर की विचार छह से?

फेकू- हमर विचार यएह अछि देहात जा कऽ कम दाममे रसुन-पियौज कीनि आनी आ नवका दरसँ बेची। बड़ नफ्फा हएत। नै हौ भाय?

गन्नू- एक्के सालमे तूँ धनीक भऽ जेबह। बढ़ियॉ विचार छह, कक्का। ई धन्धा तूँ अबस्स करह।

रमन- *(ताश पटकैत)* रसुन-पियौज।

अमन- *(ताश समटैत)* दोस, तोहर रसुन-पियौज कमाल कऽ गेलौ।

सुमन- ऐ बेर हमर रसुन-पियौज काज करतौ। हमरा रसुन-पियौजक आगू सबहक फाइल रहतौ।

पवन- नै दोस, ऐ बेर हमर रसुन-पियौज केकरो नै चलए देतौ।

चुल्हाइ- तूँ ताश-ताश खेलै छेँ आकि रसुन-पियौज? एत्ते कियो रसुन-पियौज, रसुन-पियौज करए। फेकू भायकेँ रसुन-पियौज कोनो लगै छैन से। तखैनसँ रसुन-पियौज रसुन-पियौज घसने छेँ!

फेकू- अपन-अपन बापकेँ रसुन-पियौज, रसुन-पियौज कहै जाइ जेतै, से नहि हेतइ।

रमन- *(ताश पटकैत)* रसुन-पियौज।

सुमन- रसुन-पियौज।

पवन- *(किछु सोचैत)* रसुन-पियौज दिऐ की नहि। नइ देबै, बड़ महग छइ। नै देबै तँ सुअदगर नै हेतइ। दऽ दइ छिऐ, देखल जेतइ। जे हेतै से हेतइ। हइए रसुन-पियौज *(ताश पटैक देलक।)*

चुल्हाइ- ई सभ आदमी छिऐ की जानवर छिऐ। से नइ कहि। रसुन-पियौज, रसुन-पियौजक बेमारी भऽ जाइ गेल छइ। ताश खेलैले आएल अछि तँ ताश खेलौ आकि रसुन-पियौज, रसुन-पियौज करैए। जखैन हमरा एते खराप लागि रहलए तखैन फेकू भायकेँ केते खराप लगैत हेतैन।

रमन- *(ताश पटकैत)* रसुन-पियौज।

सुमन- *(ताश पटकैत)* रसुन-पियौज।

अमन- *(ताश पटकैत)* रसुन-पियौज।

पवन- *(ताश पटकैत)* रसुन-पियौज।

कैलू- चुल्हाइ कक्का, काल्हि हमर कनियाँ तरकारीमे जाड़ दुआरे रसुन बेसी दऽ देने छेलै से खेलौं तँ सौंसे देह महकै छेलए आ परसु पियौज दऽ देने छैलै से मुँह बड़ भबकै छेलए। खच्चरी मौगियाकेँ कहलिऐ जे रसुन-पियौज बेसी खरचा नै कर, महग छइ। तहूमे हम वैष्णो होइबला छी। ओकरा ओते समझा-बुझा कऽ कहलिऐ जे रसुन-पियौज नै खेबहीन तँ विचार आ नजैर नीक रहतौ। जेना बबाजी सभकेँ रहै छइ। उ फट्टसन कहि देलक जे आशाराम बापू कोन रसुन-पियौज खाइ छेलै जे जेहल ओगरै छइ। उ जबरदस्ती कहलक जे हम रसुन-पियौज खेब्बे करब आ खुएबे करब। हमरा रसुन-पियौज बिना नै रहल हएत।

चुल्हाइ- बौआ, तूँ की बजै छिही आ केकरा की कहै छिही, सभटा बुझै छियौ। फेकू भाय नीक लोक छथिन, तँए किछु नै कहै छथुन। उहो सभ किछु बुझै छथुन। आइ दोसर

आदमी रहितौ तँ परदेशिया जकाँ एकहकटा गारि लाख-करोड़क देतौ। अपने मन खुश भऽ जाइतौ।

फेकू- आब जे सार सभ एक्को बेर बजतै तँ हम ओइ सारकेँ देखा दइ छिऐ।

कैलू- चुल्हाइ कक्का, अहाँ बुझनुक लोक छी। चढ़ा-उतरीबला गप नै बजियौ। रसुन-पियौज कोनो खराप चीज नै छिऐ। रसुन-पियौज बड़ नीक चीज छी। रसुन-पियौजसँ केतेको दवाय बनैए।

फेकू- *(तामसे विभोर भऽ कैलूकेँ ऊपर-निच्चाँ निहारैत।)* जो ने सार, अपना माएकेँ दिहैन।

कैलू- फेकू भाय, मुँह सम्हारि कऽ बाजह। हम तोरा किछु नै कहि रहल छिअह, चुल्हाइ कक्काकेँ कहै छिऐन।

फेकू- जो सार, चुल्हाइए भायकेँ अपना माए-बहिन लग लऽ जाही।

कैलू- फेकू भाय, हम जाइ छी। अहीं खुश रहूँ। अच्छा भाय एगो विचार दिअ जे हम रसुन-पियौजक धन्धा करी की नइ?

फेकू- जो ने सार, अपना माए-बहिनकेँ पुछिहैन।

रमन- *(ताश समटैत)* दोस, अपने ऐ बेर हम रसुन-पियौज द्वारे हारि गेलियौ।

फेकू- सार, देखै नै छिहीन, बाप भीख माँगि कऽ खाइ छौ। भीख मंगाक बेटा छेँ आ फुटानी करै छेँ सार।

सुमन- आब जे कोइ फेकू भायकेँ रसुन-पियौज कहतै ओकरा हम नै छोड़बै, सातू पुरखाकेँ उकटबै। केकरो किए कहबै रसुन-पियौज, रसुन-पियौज।

फेकू- सार सभ, हरामी बच्चा सभ, हमरा बुरबक बनबैत रहैए। हम केकरोसँ कथीमे कम छी। ऐ सार सभ जकाँ हमरा नाति-पोता अछि। हमरा जे किछु कहत, ओकरा माए-बहिन-नानी-दादी लग हमर नाति-पोता जेत्तै। तहूसँ नै हेतै तँ हमहूँ दुनू बाप-पुत जेबइ। *(फेकूक प्रस्थान)*

चुल्हाइ- आब फेकूकेँ रसुन-पियौज लागि गेलौ। देखियहैन, आब रसुन-पियौजक केतौ चर्चा हेतौ आ उ सुनि लेतौ तँ ओकरा अबस्स लगतौ आ उ खूम गरियेतौ।

(ताश बन्न कऽ दइ जाइ गेल। सभ जाइले ठाढ़ भऽ तैयार अछि।)

रमन- एक बेर जोरसँ बाजै जाइ जाउ, रसुन-पियौज महराज की।

सभ कियो- जय हो। *(हँसैत-हँसैत सबहक प्रस्थान। तुरन्त एक कातसँ फेकू आ दोसर कातसँ मंगलाक प्रवेश।)*

मंगला- कक्का गोर लगै छियह- 3

फेकू- की बात छियौ, बाज।

मंगला- केतए जाइ छहक।

फेकू- की बात, बाज ने।

मंगला- समस्तीपुर जाइ छहक की?

फेकू- हँ की?

मंगला- हे पाय लाए, हमरा ले एक-एक किलो रसुन-पियौज नेने अभीहह।

फेकू- रौ सार, *(ढेला उठा कऽ)* तोरा नानी लग जाइ छियौ। *(मंगलाक प्रस्थान)*

सभ सरबा हमरापर लागि गेल अछि। एक दिन केकरो कान-कपार फोड़ि देबै। सार सभ लड़ैत रहत हमरासँ केस।

(सोनू आ मोनूक प्रवेश) आगू-आगू फेकू आ पाछू-पाछू सोनू-मोनू बटोहीक रूपमे जा रहल अछि।)

सोनू- मोनू दोस, सँकठाहा सभ रसुन-पियौज किए पसीन करै छइ?

मोनू- ई गप सँकठाहाकेँ पुछहीन गे। हम तँ वैष्णो छी। देखै छिही गरदैनमे।

(मोनू रसुन-पियौजक माला सोनूकेँ देखबैए।)

सोनू- रौ बैंह, ई कोन कण्ठी छियौ रौ? एकर की गुण छइ?

मोनू- एकर गुण मति पुछ दोस। बड़ गुण छै। सरदी-खोंखी तँ नहियेँ हेतौ आ लू सेहो ने धरतौ।

सोनू- हमरा नै बुझल छेलए।

मोनू- ओइ बुढ़बाकेँ पुछहीन। फुइस छिऐ की साँच छिऐ।

(सोनू-मोनू झटैक कऽ फेकू लग गेल।)

सोनू- हौ बुढ़बा, रसुन-पियौजसँ सरदी-खोंखी।

(लाठीसँ मारैले दौगल।)

फेकू- रौ सरबा बेटा सभ। आइ बापसँ भेँट करेबौ।

(आगू-आगू छौड़ा सभ भागि रहलए आ पाछू-पाछू फेकू खिहारि रहलए।)

आइ तोरा माए लग जेबौ, बहीन लग जेबौ। सार सभ धिया-पुताकेँ जनमा कऽ रस्तापर ओंघरा देने अछि।

(सोनू-मोनू भागि गेल। फेकू हकैम रहलए।)

आइ सार सभ पकड़ैए नै देलक। नै तँ ओकरा नानी-दादीसँ चुमौन कऽ लैतिऐ।

(चुल्हाइक प्रवेश)

चुल्हाइ- फेकू भाय, की हाल-चाल? किए हकैम रहल छी एते?

फेकू- सार सभ, अनजनुआँ जनमल सभ, बड़ तंग कऽ दइए।

चुल्हाइ- एना नै करबाक चाही केकरो। तहूमे अहाँ बुढ़ भेलिऐ। अच्छा एगो कहू भाय, अहाँकेँ लगै किएक अछि रसुन-पियौज, रसुन-पियौज?

फेकू- रौ सार, हरामी बच्चा, कुकुर बच्चा, सुगर बच्चा। हमरा तूँ सांत्वना दइले एलेँ आकि हरान करैले एलेँ?

(फेकू चुल्हाइकेँ खिहारलक। उ चुल्हाइक धोती पकैड़ लेलक। चुल्हाइ भागैले चाहैए। मुदा धोती फेकू नै छोड़लक। दुनूमे उट्ठम-पटका भऽ रहल अछि।)

तोरा माए लग साँढ़ गेल छेलौ?

चुल्हाइ- सार, मुँहमे रसुन-पियौज इुसि देब।

फेकू- सार, बत्तू जनमल, इहए लाठी मुँहमे कोंचि देबौ।

चुल्हाइ- भाय, आब नै कहबौ। जे कहलियौ से गलती केलियौ।

फेकू- कान पकड़ सार। *(चुल्हाइ कान पकड़लक। झगड़ बन्न भऽ गेल। दुनू हकैम रहल अछि।)*

चुल्हाइ- आब तोरा कोइ रसुन-पियौज, रसुन-पियौज कहतै तँऽऽऽ।

फेकू- सार फेर कहैए। सार बापसँ भेँट करेबौ। कोनो बाप काज नै देतौ। हमहीं छियौ अस्सल बाप। तूँ माएकेँ पुछि लिहैन।

चुल्हाइ- हे भाय, गोर लगै छिऐ। आब नै गारि पढ़। मारबो केलेँ आ गारियो बड़ देलेँ।

फेकू- तोहर चालिए तेहेन छौ तँ गारि नै देबौ।

चुल्हाइ- गोर लगै छियौ भाय, आब गारि नै दे।

फेकू- पाँच बेर कान पकैड़ कऽ उठ-बैस। तहन छोड़ि दइ छियौ।

(चुल्हाइ पाँच बेर कान पकैड़ कऽ उठा-बैसी केलक।)

चुल्हाइ- *(कनी दूर जा कऽ)* रसुन-पियौज, रसुन-पियौज।

फेकू- सार, अखने हम पंचैती बैसबै छियौ। आइए बापसँ भेँट कराबै छियौ।

(चुल्हाइक प्रस्थान)

जाइ छी सरपंच साहैब ऐठाम एम्हरैसँ। आइ बेटी ऐठाम नै जाएब। आब समधीनकेँ घरपर भेँट नै कऽ सकलिऐ। होस्पीटलेमे भेँट कऽ लेबइ। पहिने ऐ चुल्हबा सारकेँ बापसँ भेँट करा दइ छिऐ।

(फेकूक प्रस्थान। फेकूक बड़का बेटा बिहारीक प्रवेश।)

बिहारी- कहॉदून हमरा बाबूकेँ रसुन-पियौज, रसुन पियौज लगै छैन। नइ लगबाक चाही। जेते लगतैन तेते लोक आरो कहतैन। ऐमे लोक गारि-फज्झैतकेँ धियान नै दइ छइ। खाली हँसै-हँसबैक धियान दइ छइ। ई तँ हँसी-मजाक भेलइ। ऐमे नमहर-छोटक कोनो खियाल नै होइ छइ। कोइ केकरो कहि सकैए। हमरा ई गप नै बुझल छेलए। अखैन चुल्हाइ काका बजलखिन हेन। तहूमे आइ कहॉदून पंचैतियो हेतइ। हमरा लगैए पंचैतियो मजाके नै भऽ जाइ। *(बिहारीक प्रस्थान)*

(सरपंच रामदेव, ओकील प्रेम, एकटा प्रतिष्ठित आदमी लक्ष्मण तथा दूटा पड़ोसी दुखन आ शत्रुघ्नक संग फेकूक प्रवेश।)

रामदेव- फेकू भाय,सभ कियो चलि एला की?

फेकू- नै सरपंच साहैब, असलका एबे ने कएल हेन। वएह अछि स्वीट प्वाइजन।

रामदेव- के यौ?

फेकू- ओकर नामो लइक मन नै होइए। मुदा लीहे पड़त। चुल्हाइ।

प्रेम- चिन्हलिऐ सर?

रामदेव- नै चिन्हलिऐ। के छिऐ चुल्हाइ?

प्रेम- परदेशियाकेँ जे ओसारी दालि कहैत-कहैत गामसँ झंझारपुर भगा देलकै आ उ बेचारा ओत्तै परान तियागि

देलक। सएह छिऐ ने! लोककेँ हरदम हँसैबते रहै छइ। बुझु ने जोकरे छी ओ।

(चुल्हाइक प्रवेश।)

चुल्हाइ- सरपंच साहैब परिणाम। ओकील साहैब परिणाम।फेकू भाय। अहाँकेँ किछु नै कहब, डर होइए।

रामदेव- नै नै, ई नै हेबाक चाही। एतए डरक कोनो बात नै छइ। जे बजबाक अछि से बाजू। मुदा अनुचित नै हेबाक चाही।

चुल्हाइ- साहैब, हम तँ बुरबक लोक छी। हमरा उचित-अनुचित नै बुझऽ अबैए।

(मुँह बिधुआ लइए)

तैयो बजै छी। फेकू भाय, नमस्कार।

(फेकू तामसे विभोर भऽ जाइए। बिहारी, रमन, सोनू, मोनू, सुमन, अमन, पवन, कैलू आ गन्नूक प्रवेश।)

रामदेव- फेकू भाय, बाजू की बात अछि अहाँक?

फेकू- चुल्हबा हमरा कीचकीचबैत रहैए, से किए? हम एकर ठकदरूआ छिऐ?

रामदेव- चुल्हाइ, अहाँ हिनका कीचकीचबैत रहै छिऐ किए?

चुल्हाइ- रसुन-पियौजक महगाइ अकास छुने जा रहल अछि। ई गप के नै बुझै छथिन? ई गप बजैमे फेकू भायकेँ की दिक्कत? अहीं कहू।

रामदेव- रसुन-पियौज तँ कोनो गारि-फज्झैत नै भेलइ। वास्तवमे रसुन-पियौज महग भऽ गेलैए। अखैन सबहक नजैरमे रसुन-पियौज छइ।

फेकू- सरपंच साहैब, अहूँ हूसि रहल छी। अहाँ फैसला करब की कथीदून-कथीदून बजै छी।

(फेकूक छोटका बेटा बचनूक प्रवेश।)

रामदेव- पहिने फैसले कऽ दिअ, बात पछाइत बुझबै सहए ने?

प्रेम- से केतौ होइ। पंचैतीमे दुनू पक्षक गप बुझिए कऽ कोनो फैसला होइ छइ। रसुन-पियौज दैनिक जीवनक बड़ आवश्यक चीज छी। रसुन-पियौजक बिना तरकारी उदास लगै छइ। रसुन-पियौजसँ देहमे गरमी अबै छइ।

फेकू- अहाँ ओकील छी आकि ओकीलक झड़ छी। अखैन उज्झट कथा हमरा मुहसँ सुनि लेब। से कहि दइ छी!

रामदेव- माछमे रसुन नै देबै आ मौंसमे पियौज नै देबै तँ माछ-मौस बनबे नै करत। देह-हाथ दुखाइमे लोक रसुन-तेल पका कऽ मालिश करै छै आ हेमोपैथिकमे एलियम-सिपा दबाइ पियौजसँ बनै छइ। हमरा नजैरमे रसुन-पियौज बड़ आवश्यक चीज छइ। अच्छा, फेकू भाय, एगो गप कहू जे रसुन-पियौज अहाँकेँ लगै किए अछि?

रसुन-पियौज तँ कोनो देहाती ओल नै छी?

फेकू- सरपंच साहैब, अहाँ साफ खतम छी। हमरा नै बुझल छल जे अहाँ एते खतम सरपंच छी। अहाँ फैसला दियौ नै तँ हमरा मुहसँ गारि निकैल जाएत।

प्रेम- अहाँ मनुख छी आकि जानवन छी? पंचैती-ले सरपंच साहैबकेँ बजा कऽ हुनका अहाँ गारि देबइ? हुनका बड़ पामर छैन। अखने बन्हा देता।

फेकू- बड़ पामर छैन तँ हमरा जे कोइ कीचकीचबैए ओकरा रोकैथ, तहन ने बुझबै बड़ पामर छइ!

मोनू- *(रसुन-पियौजक माला सरपंचकेँ देखबैत।)* सरपंच साहैब, जहियासँ ई माला गरदैनमे लेलौं तहियासँ कहियो सर्दी-जुकाम नै होइए आ केतबो करौदमे रहब तँ लू नै लगैए। सरपंच साहैब, ई रसुन-पियौजक माला हमरा बड़ गुण केलक हेन। आब हमरा माछ-मौस खाइक इच्छा नै होइए। एना तँ हमरा एतए एगो गप नै बाजक चाही मुदा बाजि दइ छी।

(किछु सोचैत) नै, नै बाजब।

रामदेव- बाजू ने, मनक बात बाजि दी। हदमद्दीसँ नीक काइए।

मोनू- हम तँ फेकू काकासँ आग्रह करबैन जे रसुन-पियौजक माला गरदैनमे पहीर लौथ। तहन हुनका रसुन-पियौज नै लगतैन।

फेकू- रौ सार, बत्तुक जनमल। जो ने अपन माए-बहिन, नानी दादी आ काकीकेँ दिहैन। *(फेकू चप्पलसँ मोनूकेँ मारैले दौगल। मुदा मोनू भागि गेल।)*

चुल्हाइ- सरपंच साहैब,जे फैसला करब से जल्दी करू। हमरा हटिया जेनाइ जरूरी अछि।

फेकू- पहिने फैसला सुन तहन जइहेँ। *(खिसिया जाइए)*

चुल्हाइ- फेकू भाय, गोर लगै छी। अहाँकेँ नै कहलौं। अहाँ नै टोकारा दियौ। हम सरपंच साहैबकेँ कहै छिऐन। सरपंच साहैब, हमर कनियाँ काल्हिए पथियामे रसुन-पियौज बेचैले रखि देने छइ। बेचैले हटिया जेबै। देरी होइ छइ। सभटा रसुन-पियौज घरेमे सड़ल जाइ छइ।

फेकू- रौ सार, हरमजादीकेँ बेटा। आइ नानीसँ बिआह करबौ, दादीसँ दुरागमन करबौ आ माए लग रहबौ। सरपंच साहैब, कहियौ चेतैले। नै तँ हमर दोख नै देब। आब हमर नरसिंह तेज भेल जाइए।

प्रेम- चुल्हाइ अहाँ फैसला सुनि लियौन तहन जाएब। जदी अहाँकेँ रसुन-पियौज सड़ि रहल अछि तँ उचित भाव-साव लगा कऽ हमरे दऽ देब। हमहीं लऽ लेब रसुन-पियौज।

फेकू- ओकील साहैब, सरबा सबहक मुँहपर ताला नै लगि रहल छइ। आब हमरा बरदास नै हएत। आब हम नै मानब। देखल जेतै जे हेतै से हेतइ।

चुल्हाइ- ओकील साहैब, अहाँ केतबो पाय देबै तँ अहाँ हाथे हम नै बेचब रसुन-पियौज आ सरपंचो साहैबकेँ ने देबै रसुन-पियौज।

प्रेम- एकर की कारण छइ?

चुल्हाइ- बड़ पैघ कारण छइ। लोक कहत जे सरपंच साहैब आ ओकील साहैबकेँ घूसमे चुल्हाइ रसुन-पियौज देलकै। हम घूसखोरीक विराधी छी।

प्रेम- तहन अहाँ सड़ाउ अपन रसुन-पियौजकेँ। फैसला हएत तहन जाएब। ओना चलि जेबै से अहाँक दिन छी।

(खिसिया गेला प्रेम)

चुल्हाइ- हम ओना थोड़हे जेबइ। कोनो-ने-कोनो भाँज लगाइए लेबै एत्तै की? नै हेतइ तँऽऽऽ अपन पड़ोसी आ परम अपेक्षित भाय फेकूकेँ दऽ देबैन। उ पाय नहियोँ देथिन तँ बुझबै अपने घरमे गेलै रसुन-पियौज।

फेकू- रौ मुसहरबा जनमल चुल्हबा सार। तोरा माए-बहिनकेँ साँढ़ लऽ जाउ, पाड़ा लऽ जाउ।

(दुनूमे मारि फँसि गेल। उठम-पटका भऽ रहल अछि। मंचासीन लोक सभ हँसि रहल अछि। फेकूक धोती खुजि गेल। और जोरसँ हँसी भऽ रहल अछि। बिहारी आ बचनू झगड़ा छोड़ा रहल अछि। तैबीच चुल्हाइक धोती सेहो खुजि गेल। और हँसी बढ़ि गेल। सार नै छोड़बौ आइ-2 कहि उट्ठम-पटका भऽ रहल अछि। अन्तिममे बिहारी फेकूकेँ आ बचनू चुल्हाइकेँ भरि पाँज कऽ पकैड़ अपना-अपना दिस कऽ झगड़ा छोड़ौलक। चारू गोरे हकैम रहल अछि।)

रामदेव- फेकू भाय, अहाँसभ फुसियाही गप ले किए झगड़-दन करै छी? रसुन-पियौज कोनो गारि नै छी।

फेकू- सरपंच साहैब, मुँह सम्हारि कऽ बाजू। नै तँ बेकार बात भऽ जाएत। चुपचाप फैसला दिअ आ अपन घर जाउ।

बिहारी- बाबू, रसुन-पियौज कोनो अधला चीज नै छिऐ, नीके चीज छिऐ। माए बजै छेली जे अहाँ जाड़मे रातिमे सुतैकाल सभ दिन रसुन खाइ छिऐ आ बिन पियौजक तरकारी नै खाइ छिऐ।

फेकू- *(आँखि लाल-पीयर करैत)* तूँहूँ सएह निकललेँ। जो बेटा छेँ, गम खा लइ छियौ। नै तँ आइ तोरा बापसँ भेँट करैबतियौ।

बचनू- अहाँ बाबू छी, तँए मजबूर छी। अहाँक इज्जत केनाइ हमर कर्तव्य छी। नै तँऽऽऽ हमहूँ रसुन-पियौज कहितौं आ कहिते रहितौं, रसुन-पियौज।

फेकू- *(खिसिया कऽ)* तूँ तँ और छोंकि देलहीन बेटा भऽ कऽ। आइ जँ तूँ बेटा नै रहितए तँऽऽऽ माएसँ बियाह कऽ लैतियौ।

रामदेव- फेकू भाय, खिसियाउ नहि, असथीर रहू।

फेकू- कथी असथीर रहू, कप्पार! अहाँकेँ अनलौं पंचैती करैले, फैसला करैले आ अहाँ झगड़े करा देलौं।

रामदेव- फेकू भाय, अहाँक फैसला भऽ गेल। दुनू बेटा कऽ देलक।

फेकू- की फैसला भेल? की फैसला केलक?

रामदेव- बिहारी बुझा दियौन।

बिहारी- बाबूकेँ हम की बुझेबैन। मुदा अहाँ कहै छी तँ कहै छिऐन- बाबू, अहाँकेँ रसुन-पियौज जेते लगत तेते लोक

कहत आ हरान करत। अहाँ एक्को रत्ती ओइपर धियान नै दियौ। लोक अपने कहैत-कहैत थाकि कऽ छोड़ि देत।

रामदेव- बचनू, अहाँ बाबूकेँ अपन विचार दियौन।

बचनू- अपनेक आज्ञाक पालन करहे पड़त ने। बाबूजीसँ आग्रह करबैन जे कियो किछु कहैन, केतबो खीझबैन, उ एक्को बेर टोकारा नै देथिन। जदी मन बड़ व्याकुल भऽ जेतैन तँ हँसि कऽ कहथिन जे हमरा कोनो लगैए से। ई कहि ओतएसँ चलि जेथिन हँसैत-हँसैत। अपने सभ कहनाइ छोड़ि देतैन। आब जँ बाबू नै मानथिन तँ हमहूँ कहबैन रसुन-पियौज, रसुन-पियौज।

बिहारी- हमहूँ नै छोड़बैन। हमहूँ कहबैन रसुन-पियौज आ सभकेँ सीखा देबै रसुन-पियौज कहैले।

रामदेव- फैसला भऽ गेल, फेकू भाय आब अहाँ अपन फैसला दिअ।

फेकू- *(शान्त भऽ मुस्कियाइत)* आब हम किनको कोनो टोकारा नै देबैन। हमरा गारियो देत तँ हम मुस्किया कऽ ओतएसँ टरि जाएब। जे केलौं से आब कहियो नै करब।

(सभ मंचासीन लोक रसुन-पियौज, रसुन-पियौज बेराबेरी कहलकैन। मुदा फेकू मुस्कियाइत रहल, टोकरा नै देलक।)

चुल्हाइ- आब फेकू भाय सुधैर गेला। फेकू भाय रसुन-पियौज।

फेकू- चुल्हाइ भाय, रसुन-पियौज।

(दुनू गोरे रसुन-पियौज, रसुन-पियौज करैत गरदैन-मे-गरदैन मिलौलैन। थोपरीक बौछार भेल।)

◌

इति शुभम